

जैली हल्के के 12 मदनी कामों में से 12 वां मदनी काम

मदनी इन्ड्रामात



- ❖ मदनी इन्ड्रामात क्या है ?
- ❖ मदनी इन्ड्रामात की दरजाबन्दी
- ❖ मदनी इन्ड्रामात के मकासिद
- ❖ चन्द मदनी इन्ड्रामात के तिब्बी व साइन्सी फ़्रेवाइद
- ❖ मदनी इन्ड्रामात पर अ़मल करने का फ़र्ज़ी जदवल
- ❖ इजतिमाई फ़िक्रे मदीना का तरीका

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

أَنْهَنُّا بِيُورَبِ الْعَلَيْئِينَ وَالشَّلُوْقُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ النَّزَارِ سَلِيْمَنَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْكَفَرِ الْجَنِيمِ طِبْنَمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طِبْنَمِ

کیتاب پढنے کی دعاء

دینی کتاب یا اسلامی سبک پढنے سے پہلے جے ل میں دی ہوئی دعاء پढ لیجیے اِن شاء اللہ عزوجل

جیسا کہ پढنے والے کو خداوند کی رحمت کے دلخواہی کے خواص دے دیں۔

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُعْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

ترجمہ : اے اہل لام ! ہم پر ایلمو ہیکمتوں کے درخواجے خویل دے اور ہم پر اپنی رحمتوں ناجیل فرمائیں ! اے اہل رحمتوں اور بخششیوں والے !

(مستطرف ج ۱ ص ۴ دار الفکر بیروت)

نوت : ابھل آخیر اک-اک بار دوڑد شریف پढ لیجیے ।

ٹالیبے گمے مدنیا

بکھری ای

و ماغفیرت



13 شعبان 1428ھ.

کیامت کے روزِ حسرت

فَرْمَانِيَ مُسْتَفْضا : سب سے جیسا کہ اسلامی حسرت کیامت کے دن اس کو ہوگی جسے دنیا میں ایلم ہاسیل کرنے کا ماؤکھہ میلا مگر اس نے ہاسیل نہ کیا اور اس شاخہ کو ہوگی جس نے ایلم ہاسیل کیا اور دوسروں نے تو اس سے سुن کر نافذ ہٹایا لے کین اس نے نہ ہٹایا (یا نہیں اس ایلم پر اہمیت نہ کیا) (تاریخ دمشق لا بن عساکر ج ۱ ص ۳۸۵ دار الفکر بیروت)

کتاب کے خریدار میتوان جوہ ہوں

کتاب کی تباہی میں نہ مایاں خراہی ہو یا سफہات کم ہوں یا باہینڈگ میں آگے پیچے ہو گئے ہوں تو مکتبہ تعلیم مدنیا سے رجوع فرمائیے ।

أَنْهَنُّ يُبَرِّئُ الْعَلَيْهِ وَالشَّهُوُّ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ النَّزَارِ إِلَيْهِ مَا أَبَغَ فَأَعْذُبُ يَا لَهُ مِنَ الْكَفِيلِنَ الرَّؤْيَمِ طَبِيبِنَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

مجالिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मव्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरतब किया है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाए़अ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ **Sms, E-mail, Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इन्तिलाअ़ दे कर सवाबे आखिरत कमाइये।

मदनी इलितजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

 ...राबिता :-



सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = ٿ	ਤ = ٿ	ਫ = ڻ	ਪ = ٻ	ਭ = ڻ	ਬ = ٻ	ਅ = ।
ਛ = ڙ	ਚ = ڙ	ਝ = ڙ	ਜ = ڳ	ਸ = ڻ	ਠ = ڻ	ਟ = ڻ
ਜ = ڙ	ਢ = ڙ	ਡ = ڙ	ਧ = ڙ	ਦ = ڙ	ਖ = ڙ	ਹ = ڙ
ਸ਼ = ڙ	ਸ = ڙ	ਜ = ڙ	ਜ = j	ਫ = ڙ	ਡ = ڙ	ਰ = r
ਫ = ڻ	ਗ = ڻ	ਅ = ڻ	ਜ = ظ	ਤ = ٻ	ਜ = ض	ਸ = ص
ਮ = م	ਲ = ل	ਬ = ڳ	ਗ = ڳ	ਖ = ڪ	ਕ = ڪ	ਕ = ڪ
ੰ = ڻ	ੁ = ڻ	ਆ = ڻ	ਧ = ڻ	ਹ = ڻ	ਵ = ڻ	ਨ = ن

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
آمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ طِبِّسُمُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ط

مَدْنَى الْبَرَّ

दुर्कृद्ध शारीफ की फ़जीलत

एक मरतबा **अल्लाह** के प्यारे हबीब **صلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने आज रात अ़्जीब मन्ज़र देखा, मैं ने देखा कि मेरा एक उम्मी धरुपुल सिरात् से गुज़रते हुए कभी चलता है तो कभी गिरता है और कभी लटक जाता है, फिर अचानक उस के पास मुझ पर पढ़ा हुवा दुरुदे पाक आया, जिस ने उस का हाथ पकड़ कर उसे पुल सिरात् पर सीधा खड़ा कर दिया यहां तक कि वोह पुल सिरात् पार कर गया ।⁽¹⁾

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी, तेरे ही नाम से टली मुश्किल कुशा है तेरा नाम, तुझ पर दुरुद और सलाम

صَلُوٰعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُوٰعَلَى الْحَبِيبِ !

बुजुर्गों की मदनी झोच

एक बार हज़रते सच्चिदुना इब्राहीम बिन अदहम **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** से अर्ज़ी की गई : हुजूर ! कभी तो हमारे साथ बैठ जाया करें ताकि हम भी आप की मजलिस की बरकत से और मल्फूज़ात शरीफ से फैज़ हासिल करें । तो आप ने **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने इरशाद फ़रमाया : मैं अभी चार उम्र में बहुत ज़ियादा मसरूफ़

[1] نوادر الاصول، الاصل المائتان والخمسون في بر الوالدين، ٢٣٣ / ٢

हूं जब इन से फ़राग़त पाऊंगा तो तुम्हारे पास ज़रूर बैठूंगा । अर्ज़ की गई : ऐ अबू इस्हाक ! वोह कौन से उम्र हैं ? इरशाद फ़रमाया :

﴿1﴾ ﴿1﴾ जब मुझे वोह घड़ी याद आती है जब **اللّٰهُ** पाक ने हज़रते سच्चिदुना आदम ﷺ سے वा'दा ले कर फ़रमाया था कि येह लोग जन्त में जाएंगे और येह जहन्म में । तो मुझे येह फ़िक्र लाहिक़ है कि ना मा'लूम मैं किस गुरौह में होऊंगा ?

﴿2﴾ ﴿2﴾ इसी तरह जब नुत्फ़ा मां के रहिम में ठहरता है और उस में रूह फ़ूंकी जाती है तो मुअक्किल फ़िरिश्ता अर्ज़ करता है : या **اللّٰهُ** ! येह नेक बख़्त है या बद बख़्त ? लिहाज़ा जब मुझे येह बात याद आती है तो मैं इस फ़िक्र में मुब्तला हो जाता हूं कि पता नहीं मेरे मुतअ़्लिक़ क्या जवाब मिला होगा ?

﴿3﴾ ﴿3﴾ मौत का फ़िरिश्ता रूह क़ब्ज़ करते हुए जब **اللّٰهُ** पाक से अर्ज़ करता है कि ऐ मौला ! इस की रूह इस्लाम पर क़ब्ज़ करूं या कुफ़्र पर ? तो येह सोच कर मुझे येह अन्देशा खाए जाता है कि ना मा'लूम मेरे मुतअ़्लिक़ क्या जवाब मिलेगा ?

﴿4﴾ ﴿4﴾ क़ियामत के दिन जब परवर दगारे आ़लम येह ए'लान फ़रमाएगा :

وَأَمْتَازُ الْيَوْمِ أَيْمَانُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾ (پ ۲۳، بس: ۵۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो ।

चुनान्वे, येह याद कर के मुझे डर लगा रहता है कि न जाने **اللّٰهُ** पाक मुझे किस गुरौह में शामिल करेगा ? बस येही वोह उम्र हैं जिन्हों ने मुझे तुम्हारे साथ बैठने और बातें करने से रोक रखा है ।⁽¹⁾

या रसूलल्लाह ! मुजरिम हाजिरे दरबार है नामए आ'माल में कोई नहीं हुस्ने अमल तुम शहे अबरार येह सब से बड़ा इस्यां शिआर

नेकियां पल्ले नहीं सर पर गुनह का बार है पास दौलत नेकियों की कुछ नहीं नादार है यूं शफ़ाअत का येही सब से बड़ा हक़दार है⁽¹⁾

صَلُوٰعَلٰى الْحَبِيبِ !

उख्ख़रवी कामयाबी की फ़िक्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे बुजुगने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ की मदनी सोच कैसी थी ! उन्हें हर दम येही फ़िक्र रहती कि ऐ काश ! दुन्या से रुख़स्ती के वक्त ईमान सलामत रहे और जब बरोज़े क़ियामत बारगाहे खुदावन्दी में हाजिरी हो तो शर्मसारी का सामना न करना पड़े । येही वज्ह है कि वोह इस बात का खुसूसी ख़्याल रखते कि उन का कोई लम्हा ग़फ़्लत (Headlessness) में गुज़रे न अपने रब की मा'सियत (Sin) में । लिहाज़ा हम भी हमेशा येही कोशिश करें कि हम से कोई ऐसा काम सरज़द न हो जिस की वज्ह से बरोज़े क़ियामत बारगाहे खुदावन्दी में हिसाब किताब के वक्त शर्मसार होना पड़े । चुनान्वे,

मन्कूल है कि किसी बुजुर्ग ने अपने बेटे से फ़रमाया : दिन भर जो भी बात सुनो या जो कुछ देखो और जो भी अमल करो शाम को मुझे बताना । चुनान्वे, उस शाम बेटे ने दिन भर की कारगुज़ारी की रिपोर्ट (Report) तो दे दी, मगर अगले दिन मा'जिरत (Sorry) करते हुए अर्ज़ की : अब्बाजान ! पहाड़ (Mountain) तो सर पर रख सकता हूं लेकिन दिन भर के आ'माल की

[1]....वसाइले बरिशाश (मुरम्मम), स. 471

کاراگujarati سुنانے کی مुझ میں ہیممت ہے ن بیان کی جو ات । اس پر اس کے والید ساہیب نے فرمایا : میں بھی تو ہم مجبور نہیں کر سکتا، بلکہ میں نے تو تumhene یہ کام سیرہ اس لیے کرنے کا کہا تھا تاکہ تو یہ جان سکو کی جب تو ہم میرے سامنے اک دین کا ہیساں کیتاب بیان نہیں کر سکتے تو فیر ساری جنگی کا ہیساں کیتاب **اللہ عزیز** پاک کے ہام کیس ترہ دے سکو گے ?⁽¹⁾ تولے نہ حشر میں اٹھا کے اممال مولیا بیلا ہیساں ہی نہ اس کو بخشنانا یا ربا⁽²⁾

صلوٰعَلِ الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

انعاموں کا انتہا

میठے میठے اسلامی بھائیو ! اپسوس ! ساد اپسوس ! ہم ہمیں آخیرت سے گافیل ہو چکے ہیں اور ہمیں ہیساں کیتاب کی کوئی فیکر نہیں، ہالانکی موت (Death) سر پے خڈی ہے اور جو کرنا ہے ابھی کرنا ہے ।

ایک دین مرننا ہے آخیر موت ہے کار لے جو کرنا ہے آخیر موت ہے

صلوٰعَلِ الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

میठے میठے اسلامی بھائیو ! ہجڑتے سیپیدونا امام ہسن بن سری رسُلُّهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَآلُّهُمَّ إِنَّمَا يَنْهَا عَنِ الْكُفَّارِ کے نسیہت بھرے یہ مدنی فول ہمسہ شا یاد رکھیے :

✿ اے ایڈم ! **اللہ عزیز** پاک کا ہک سب سے اپنے لے ہے اور وہ اس وکٹ تک تھی سے راجی ن ہو گا جب تک تو ان اہکام کو پورا ن کرے گا جو اس نے تھی پر لاجیم کیے ہیں ।

..... سوچ لیکن، پ ۱۵، الاسراء، تحت الآیة: ۱۳۱ / ۵

[2] ... وسایل بخشش (مومم)، س 83

❖ ऐ इन्हे आदम ! जब तू लोगों को नेक काम करता देखे तो उन से आगे बढ़ जाने की कोशिश कर, मगर जब उन्हें हलाकत व बरबादी के कामों में मुक्तला देखे तो उन से और उन के अफ़आल से कोसों दूर भाग जा । हम ने ऐसे लोग भी देखे हैं जिन्होंने अपनी दुन्या को आक़िबत (आखिरत) पर तरजीह़ दी तो वोह ज़्लीलो ख़्वार हो गए ।

❖ ऐ इन्हे आदम ! ईमान की ह़कीकत पाना चाहता है तो लोगों के बोह ऐब मत उछाल जो तुझ में पाए जाते हैं, बल्कि पहले अपने उघूब की इस्लाह की फ़िक्र कर, कि जब तू अपने उघूब की इस्लाह में लग जाएगा तो तुझे दूसरों के ऐब देखने की फुरसत ही न मिलेगी ।

❖ ऐ इन्हे आदम ! तू ईमान और ख़्यानत को एक साथ जम्म न कर ।

❖ ऐ इन्हे आदम ! तू कैसे कामिल मोमिन हो सकता है जब कि तेरा पड़ोसी (तुझ से) महफूज़ न हो ?

❖ ऐ इन्हे आदम ! तू कैसे कामिल मुसलमान हो सकता है जब कि लोग तुझ से सलामत न हों ?

❖ ऐ इन्हे आदम ! दुन्यवी ज़िल्लत से घबरा न दुन्यवी इज़्ज़त की ख़ातिर दुन्यादारों से मुक़ाबला कर । बल्कि **अल्लाह** पाक से हर दम डर, मा'लूम नहीं तुझ से जो गुनाह सरज़द हुवा है, उस के बदले **अल्लाह** पाक तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाएगा और मौत के बा'द न जाने तुझे कैसी कैसी हलाकतों और परेशानियों का सामना करना पड़ेगा ।

❖ ऐ लोगो ! सन्जीदा हो जाओ । अब वक़्त आ गया है कि आंखें खोल लो । खुदा की क़सम ! दुन्या जब दुन्यादारों के लिये खोली गई तो साथ ही उस के कुत्ते (या'नी हिर्स और फ़ितना व फ़साद) भी खोल दिये गए जो कि इन्तिहाई

बुरे हैं। यहां तक कि जो लोग इन कुत्तों का शिकार बने वोह हुसूले दुन्या की ख़ातिर एक दूसरे पर तलवारें ले कर चढ़ दौड़े और बा'ज़ ने तो दूसरों की हुरमत तक को हळाल समझ लिया। हाए ! अफ़सोस ! ये ह कितना बड़ा फ़साद है।

✿ ऐ लोगो ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े कुदरत में ह़सन की जान है ! इस दुन्या में हर एक ग़म व परेशानी में मुब्लिता है। लिहाज़ा राहत चाहते हो तो जल्दी से बारगाहे खुदावन्दी में हाजिर हो जाओ।

✿ ऐ इन्हे आदम ! जो रिज़्क़ तेरे नसीब में है वोह तुझे मिल कर ही रहेगा (इस की फ़िक्र में खुद को हल्कान न कर), कि उम्रे आखिरत से नजात पाने के लिये तू नेकियों का ज़ियादा मोहताज़ है, लिहाज़ा तुझ पर लाज़िम है कि तू आखिरत की तयारी कर। अगर तू ये ह काम करने लगेगा तो दुन्या खुद तेरे क़दमों में आ गिरेगी।

✿ ऐ इन्हे आदम ! बन्दे दो तरह के होते हैं : आखिरत के तलबगार उसे पा कर कभी न खोएंगे, मगर जो लोग दुन्या की त़लब में रहते हैं वोह जो पाते हैं उस से ज़ियादा खो देते हैं।

✿ ऐ इन्हे आदम ! दुन्या बस अपने इख़िताम के क़रीब है, इस की ने'मतें दाइमी हैं न इस के मसाइबो आलाम से कोई महफूज़ है, इस की हर नई चीज़ पुरानी हो जाती है, इस में कोई सदा सिह़त मन्द रहता है न हमेशा ग़नी रहता है। ये ह अपने रहने वालों को अक्सर अ़ज़ाब से दोचार और खेल तमाशा बनाए रखती है। इस में तेरे लिये सिर्फ़ वोही शै फ़ाएदे मन्द है जिसे तू आखिरत के लिये भेज चुका है। लिहाज़ा दुन्या में माल जम्भ़ कर न इस चीज़ में अपने

नफ्स की पैरवी कर कि जिस के मुतअल्लिक़ तू जानता है कि इसे तू ने अपने पीछे छोड़ कर चले जाना है और आने वाली मशकृतों के लिये ज़ादे राह तयार कर (या'नी नेकियां कर) और बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी से कब्ल इस का एहतिमाम कर। कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए और तेरी ख़्वाहिशात धरी की धरी रह जाएँ और तुझे शरमिन्दगी उठाना पड़े कि उस वक्त की नदामत व शरमिन्दगी किसी काम न आएगी।

✿ ऐ इब्ने आदम ! दुन्या को अपने जिस्म की सोहबत तो अ़ता कर मगर उसे अपने दिल से दूर रख और उस के ग़म में मुब्ला न हो।

✿ ऐ इब्ने आदम ! जिस काम (या'नी इबादत) के लिये तुझे पैदा किया गया है उस में ख़ूब कोशिश कर। अपनी मश्गुलिय्यत और फ़राग़त के लम्हात का ख़्याल रख कि यहां जो भी अ़मल करेगा कल उसे खुद ही देख लेगा और उस के बारे में तुझ से पूछा जाएगा, बस तू सुब्हो शाम मौत का इन्तिज़ार कर।

✿ ऐ इब्ने आदम ! मौत की तयारी में जल्दी कर और कल कल की रट न लगा। जो करना है आज कर ले। क्यूंकि तू येह नहीं जानता कि कब तुझे अल्लाह पाक की तरफ़ लौट कर जाना है।

✿ ऐ इब्ने आदम ! हरगिज़ किसी नेक काम को हक़ीर न जान ! कि जब तू उसे दारे जज़ा में देखेगा तो खुश हो जाएगा और किसी बुरे काम को भी हरगिज़ छोटा न जान ! कि कल जब तू उसे अपने नामए आ'माल में देखेगा तो ग़मनाक हो जाएगा।

✿ ऐ इब्ने आदम ! जिस वक्त से तेरी मां ने तुझे जना उस वक्त से अब तक लगातार तेरी उम्र कम होती जा रही है और तेरे लिये एक नामए आ'माल खोल

कर तेरे ऊपर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये गए हैं। एक तेरे दाईं और दूसरा बाईं तरफ़ है। अब कम आ'माल कर या ज़ियादा ! जब तू मरेगा तो इस नामए आ'माल को लपेट कर तेरे गले में पहना दिया जाएगा ।⁽¹⁾

ज़िन्दगी अमानत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! इन्सान की ज़िन्दगी (Life) इस के पास **अल्लाह** पाक की अमानत है जिस के मुतअल्लिक उस से मौत (Death) के वक्त पूछा जाएगा, अगर उस ने इस की हिफ़ाज़त न की तो गोया उस ने **अल्लाह** करीम की अमानत ज़ाएअ़ कर दी और उस के अ़हद को छोड़ दिया और अगर अपने अवक़ात का ख़्याल रखा या'नी ज़िन्दगी की कोई भी साअ़त इत्ताअ़ते खुदावन्दी के बिगैर न गुज़ारी तो उस ने न सिर्फ़ अमानत की हिफ़ाज़त की बल्कि वोह **अल्लाह** पाक के अ़हद में भी है। लिहाज़ा इसे वा'दा पूरा करने की बिना पर पूरा बदला मिलेगा । जैसा कि फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

وَأُوفُوا بِعَهْدِكُمْ تَرْجِمَةً كَنْجُلَ الْإِيمَانُ : أُولَئِكَ مَنْ يَعْمَلُونَ
(٣٠)، الْبَقَرَةُ : (٢)

बकोजे कियामत हस्तक्षेत्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना का फ़रमाने बा क़रीना है : किसी को भी हसरत व नदामत

عيون الحكائيات، الحكائية الثامنة والعشرون بعد المائة وصايا ومواعظ غالبية، ص ١٣٣ ١

قوت القلوب، الفصل التاسع والعشرون: فيه ذكر أهل المقامات ... الخ، ١ / ١٩٢ ٢

के बिगैर मौत (Death) न आएगी, अगर गुनाहगार (Sinner) होगा तो उस की हःसरत इस वज्ह से होगी कि अच्छे आ'माल (Good Deeds) क्यूं न किये ? और अगर नेकोकार (Pious) होगा तो अफ़सोस (Regret) करेगा कि ज़ियादा नेक आ'माल क्यूं न किये ?⁽¹⁾

मिटा दे सारी ख़ताएं मेरी मिटा या रब	बना दे नेक बना नेक दे बना या रब
बना दे मुझ को इलाही खुलूस का पैकर	क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब
नहीं है नामए अःत्तार में कोई नेकी	फ़क़त है तेरी ही रहमत का आसरा या रब ⁽²⁾

صَلُوٰعَلِ الْحَبِيبِ! صَلُوٰعَلِ الْحَبِيبِ!

बहुत ही इज़्जतो एहतिराम वाले इमाम, हज़रते सत्यिदुना शैख अबू तालिब मक्की رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस रिवायत की क्या ही ख़ूब वज़ाहत (Explanation) फ़रमाई है। चुनान्वे, आप फ़रमाते हैं : बरोज़े कियामत जिन लोगों के बाएं हाथ (Left Hand) में नामए आ'माल होगा वोह इस हःसरत में मुब्तला होंगे कि वोह दाएं हाथ वालों में क्यूं कर न हुए ? और दाएं हाथ (Right Hand) में नामए आ'माल दिये जाने वाले इस हःसरत में मुब्तला होंगे कि वोह मुकर्बीन में से क्यूं नहीं हैं ? और मुकर्बीन इस हःसरत में मुब्तला होंगे कि वोह शुहदा में क्यूं शामिल नहीं हैं ? और शुहदा चाहते होंगे कि काश वोह मकामे सिद्दीकीन पर फ़ाइज़ होते। अल ग़रज़ येह दिन हःसरत का होगा जिस से ग़ाफ़िलीन को डराया गया है।⁽³⁾

.....تفسير قرطبي، ب٢٨، التغابن، تحت الآية: ٩، المجلد التاسع، ١٨/٩٠

2....वसाइले बछिंशाश (मुरम्मम), स. 78

.....قوت القلوب، الفصل الثامن والعشرون: ذكر المقام الخامس من مراقبته... الخ، ١/١٨٩

کुछ نے کیاں کما لے جلد آرخیرات بنالے کوئی نہیں بھروسہ اے براہ ! جِنْدگی کا^(۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

अभी भी वक्त है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी भी वक्त (Time) है, ख़बाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये और ज़िन्दगी (Life) के इन लम्हात को ग़नीमत जानते हुए रिज़ाए रब्बुल अनाम के हुसूल के लिये कुछ नेक आ'माल का ज़ख़ीरा जम्म़ु कर लीजिये, ऐसा न हो कि ज़िन्दगी यूंही गुज़र जाए और हम शरमिन्दगी के साथ हाथ मलते रह जाएं कि क़ाश ! कुछ ने कियां कर ली होतीं। नीज़ बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी के वक्त कहीं हमें पछताना न पड़े कि जिन को नामए आ'माल बाएं हाथ में पकड़ाया जाएगा वोह ह़सरत से कहेंगे :

يَحْسُرَتَنَا عَلَى مَا فِي طَافِيهَا

(۳۱: الْعَامَ، پ)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हाए अप्सोस हमारा इस पर कि इस के मानने में हम ने तक्सीर की ।

लिहाज़ा ज़िन्दगी के इन अव्याम को ग़नीमत जानिये और जो करना है अभी कर लीजिये, कि किसी बुजुर्ग के मुतअल्लिक मन्कूल है कि वोह जब भी इस फ़रमाने बारी तआला की तिलावत फ़रमाया करते :

كُلُّ مُؤْمِنٍ أَشْرَبُوا هَذِهِ آسْلَفُتُمْ فِي
الْأُولَى مِنَ الْعَالِيَةِ (۲۹: الْعَادَةَ، پ)

तर्जमए कन्जुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा ।

तो इरशाद फ़रमाते : ऐ मेरे भाइयो ! **अल्लाह** पाक की क़सम ! अव्यामे ख़ालिया (या'नी ज़िन्दगी के दिन) येही हैं, इन्हें कोशिश से बसर करो और

[1]....वसाइले बर्खिशश (मुरम्म), स. 178

હરાગિજ ઇન્હેં ઇબાદત સે ખાલી છોડ કર જાએઅ મત કરો । ક્યૂંકિ ઇન અય્યામ મેં આખિરત કે કામોં મેં મશ્ગૂલ (Busy) ન હોના મહેરુમી હૈ ।⁽¹⁾

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઇયો ! મિન્હાજુલ કાસિદીન મેં હૈ કિ દિન રાત મેં 24 ઘન્ટે (Hours) હોતે હું ઔર બરોજે કિયામત બન્દે કે સામને હર દિન કે બદલે સફ દર સફ 24 અલમારિયાં રહ્ખી જાએંગી । ચુનાન્ચે, જબ ઉન મેં સે એક એસી અલમારી ખોલી જાએંગી જો બન્દે કી નેકિયોં કે નૂર સે ભરી હોગી જો ઉસ ને ઉસ સાઅત મેં કી હોંગી તો વોહ ઇસ કદર ખુશ હોગા કિ અગાર ઉસ કી યેહ ખુશી તમામ જહન્મિયોં પર તક્સીમ કર દી જાએ તો હૈરાની કી વજ્હ સે ઉન્હેં અપની તકલીફ કા એહસાસ ન રહેગા ઔર અગાર સૂરત ઇસ કે બર અભ્યાસ હુઈ, યા'ની બન્દા કિસી સાઅત મેં નેકિયોં કે બજાએ ગુનાહોં મેં મુલ્કલા રહા તો જબ વોહ અલમારી ખોલી જાએંગી તો નૂર કી જગહ ઇસ કદર અધેરા ઔર બદ બૂ ફૈલેગી જિસે દેખ કર બન્દા ઇસ કદર ઘબરાહટ વ જિલ્લત મહસૂસ કરેગા કિ અગાર વોહ તમામ જન્તિયોં પર તક્સીમ કર દી જાએ તો ઉન કી ને'મતે મુકદ્દર (ખરાબ) હો જાએ । ઇસી તરહ જબ કોઈ એસી અલમારી ખોલી જાએંગી જો ખાલી હોગી ઔર ઉસ મેં કોઈ એસી શૈ ન હોગી જો બન્દે કે લિયે ખુશી યા ગ્રમી કા બાઇસ હોતી તો હકીકત મેં યેહ વોહ સાઅત હોગી જિસ મેં વોહ દુન્યા મેં સોયા રહા હોગા યા (યાદે ઇલાહી સે) ગૃફ્લત (Headlessness) કા શિકાર રહા હોગા યા કોઈ ભી નેક કામ ન કર સકા, લિહાજા ઉસ અલમારી કે ખાલી (Empty) હોને પર વોહ બહુત અફ્સોસ કરેગા ઔર ઉસે ઉસ શાખસ કી તરહ દુખ હોગા જિસે બહુત જિયાદા મનાફેઅ (Profit) કમાને કા મૌકઅ

١٥٥ قوت القلوب، الفصل الخامس والعشرون: في ذكر تعريف النفس ... الخ، /١/

(Opportunity) میلے مگر وہ اسے جاً اے (Waste) کر کے اس کسی ر
منافع (Profit) سے مہرُم ہو جائے ।⁽¹⁾

گاہیں تुڑے گھڈی یا ل یہ دےتا ہے مُنادی کُدرت نے گھڈی ٹم کی ایک اور گستاخی دی
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ہیسا ب کے پہلے ہیسا ب کی تاریخی

میठے میठے اسلامی بھائیو ! ہمے کوئی شکایت کرنی چاہیے کہ ہمارے
ڈبکل 12 بھنٹوں (24 Hours) میں سے ہر بھنٹے کے مुکابیل جو اعلماً ماری ہے وہ
نیک آمال سے بھری ہوئی ہے اور کوئی ایک اعلماً ماری بھی خالی ن رہے । اس لیے
سُستی و کاہیلی (Laziness) کا مُج़اہرا ٹھوڈ کر اسے آمال بجا لانا
ہونگے کہ برائے کیا مات رو سواری (Disgrace) کا سامنا کرنا پडے نہ ہسراہ
کا شکار ہون । اگر ہم نے اسے ن کیا تو جہاں آں لہ درجات سے مہرُمی
ہو سکتی ہے، وہیں دوسروں کو ان مکاہیات پر فکر ہوتا دیکھ کر پछتانا بھی
پڑے سکتا ہے । لیہا جا اسلامی رہنماوں نے ساییدونا ٹم فارس کے آں جم
کے اس فرمان کو ہیرے جان (یاً نی جان سے جیسا دا بढ کر پسرا)
بنانا لیجیے کہ اے لوگو ! اپنے آمال کا ہیسا ب کر لے اس سے پہلے
کہ (کیا مات آ جائے اور) ان کا ہیسا ب لیا جائے ।⁽²⁾
تو بے ہیسا ب بکھڑا دے ابڑا رے جا کو تُڑ کو نبی کا واسیتا یا رکبے مُسٹفہ⁽³⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

١..... مختصر منہاج القاصدین، باب فی المحسنة والمراقبة، المقام الاول: المشارطة، ص ۳۷۱

٢..... احیاء علوم الدین، کتاب المراقبة والمحاسبة، بیان حقیقتہ المراقبة و درجاتہ، ۸۸۹ / ۲

٣.... وسائل بریشش (مُرجم)، ص ۱۳۳

आ' माल का हिक्साब करने से मुकाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लुगवी तौर पर अपने साबिका आ'माल का हिसाब करना मुहासबा⁽¹⁾ कहलाता है और इस्तिलाहन इस से मुराद येह है कि इन्सान उख़रवी ए'तिबार से अपने मा'मूलाते ज़िन्दगी पर गौरो फ़िक्र करे, फिर जो काम इस की आखिरत के लिये नुक़सान देह (Harmful) साबित हो सकते हों, उन्हें दुरुस्त करने की कोशिश में लग जाए और जो उमूर (Matters) उख़रवी ए'तिबार से नफ़अ बख़्शा नज़र आएं उन में बेहतरी के लिये इक़दामात करे।⁽²⁾

फ़रमाने बारी तआला है :

يَا يَهَا أَلْذِينَ أَمْوَالَ اللَّهِ وَلَنْ تُنْظُرُ
نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِعَيْنٍ وَأَنْتُقُوا اللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ حَسِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ
⑩ (ب) الحشر: ۲۸

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हरे कामों की ख़बर है।

मशहूर मुफ़स्सरे कुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : एक साअ़त की फ़िक्र बहुत से ज़िक्र से बेहतर है मगर फ़िक्र से मुराद सोचना है रब की अ़ज़मत, हुज़ूर के महामिद (या'नी औसाफ़), अपने गुनाह सोचना, सब इस में दाखिल हैं, येह ही मुराक़बे की अस्ल है (हज़रते सच्चिदुना) अली मुर्तजा (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) फ़रमाते हैं : जो दुन्या में

[1]....अधिकाने रसूल की मदनी तहरीक दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह में मुहासबे को फ़िक्रे मदीना कहा जाता है।

[2]....फ़िक्रे मदीना, स. 37

अपना हिसाब करता रहेगा उस के लिये आखिरत का हिसाब आसान होगा । लिहाज़ा जब गुनाह करने लगो तो सोच लो कि रब हमारे इस गुनाह को देख रहा है ।⁽¹⁾

يَئُوْا إِلٰنْسَانٌ يُؤْمِنُ بِإِلٰهٍ مُّلْكُه
وَأَخْرَجَ بَلِ الْإِلٰسَانُ عَلَى نَفْسِهِ
بَصِيرَةٌ لِّلَّهِ وَلَا أُلْقَى مَعَادِيْرَةً
(١٥١٣، القيمة: ٢٩)⁽²⁾

तर्जमए कन्जुल ईमान : उस दिन आदमी को उस का सब अगला पिछला जता दिया जाएगा बल्कि आदमी खुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है और अगर उस के पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा ।

आज “क्या क्या” किया ?

हज़रते सच्चिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رضي الله تعالى عنه को एक बाग की दीवार के क़रीब देखा कि वोह अपने नफ़्स से फ़रमा रहे थे : वाह ! लोग तुझे अमीरुल मोमिनीन कहते हैं (फिर बतौरे आजिज़ी फ़रमाने लगे) और तू (है कि) **अल्लाह** पाक से नहीं डरता ! (याद रख !) अगर तू ने **अल्लाह** का खौफ़ नहीं रखा तो उस के अज़ाब में गिरिप्तार हो जाएगा ।⁽²⁾ एक रिवायत में है कि हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رضي الله تعالى عنه रोज़ाना अपना एहतिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा (कोड़ा) मार कर फ़रमाते : बता ! आज तू ने “क्या क्या” किया है?⁽³⁾ येही नहीं बल्कि एक

[1]....नूरुल इरफ़ान, पारह 28, अल हशर, तहतुल आयत : 18, स. 658

..... کیماں سعادت، رکن چھارہ، پاب سوم در صدق، مقام سوم در محاسبت، ص ۳۶۸ [2]

..... احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ و المحاسبۃ، بیان حقیقتہ المراقبۃ و درجاۃ، ص ۲۸۹ [3]

ریوا�ت مें تو یہاں تک है कि آپ رَبُّ الْعَالَمِينَ کے پास एक रजिस्टर था, जिस में آप अपने हफ्तावार आ'माल लिखा करते, फिर हर जुमुआ के दिन अपने आ'माल का जाइज़ा लेते और जिस अमल को (अपने गुमान में) रिज़ाए इलाही के لिये न पाते तो अपने आप को दुर्ग मारते और फ़रमाते : तुम ने ये ह काम क्यूँ किया ?^(۱)

آلہ اللہ پاک की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फिरत हो । أَمِينٌ بِجَاهِ الْبَيِّنِ الْأَمِينِ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सच्चिदुना ड़मर फ़ारूके आ'ज़म का इस तरह अपने नफ़्स को मलामत करना और **آلہ اللہ** पाक का खौफ़ दिला कर उस का मुहासबा करना हमारी ता'लीम के लिये था, मुहासबए नफ़्स या'नी फ़िक्रे मदीना तो हमारे अस्लाफ़ की आदते सानिया थी ।

फ़िक्रे मदीना कैसे की जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर शख्स पर लाज़िम है कि जब वो ह किसी काम का इरादा या अमली तौर पर कोशिश करना चाहे तो अपने इरादे और कोशिश से पहले उस में गैरो फ़िक्र करे और कुछ देर तवक्कुफ़ करे यहां तक कि नूरे इल्म के ज़रीए वाज़ेह हो जाए कि ये ह काम **آلہ اللہ** पाक के लिये है ताकि इसे कर लिया जाए या नफ़्सानी ख़ाहिश को पूरा करने के लिये है तो इस से बचा जाए और दिल को भी इस में गैरो फ़िक्र करने से रोका जाए क्यूँकि बातिल काम में मुब्तला होने से पहले नफ़्س का एहतिसाब न किया जाए तो इस में रग्बत बढ़ जाती है और रग्बत इरादे को जनम देती है और इरादा

..... درة الناصحين، مجلس في سورة الحشر... الخ، ص ۲۶۶

امال کا سबب بناتا ہے اور باتیل اُمال برباڑی اور خودا تھالا سے دُری کا سبب ہوتا ہے । اس لیے کلبی وسوسوں کو شرعاً ہی میں جڈ سے عطا دے فکنا چاہیے کیونکہ دیگر اعمّر اسی کی پیری میں رو نوما ہوتے ہیں । چنانچہ،

یاد رکھیے ! فیکر مداری میں تین تراہ کے اعمّر پر گئے رکھ کرنا چاہیے : 『۱』 وہ جو ہم پہلے کر چکے ہیں 『۲』 جو کر رہے ہیں اور 『۳』 جو آیینہ کرننا چاہتے ہیں । فیر ان میں سے ہر کام نے کیا گناہ پر مبنی ہوگا یا وہ کام مुباہ ہوگا । لیہاڑا ہر کام کے بارے میں ہم اپنے نفیس کا دو تراہ سے محسوس با کر سکتے ہیں : 『۱』 یہ کام کیون کیا ? یا کیون کر رہے ہیں ؟ 『۲』 یہ کام کیس تراہ کیا ? یا کیس تراہ کر رہے ہیں ؟

مجکورا تکسیم کے نتیجے میں چونکہ ہم بیکار کو بہت سے آمالم کا محسوس با کرننا ہوگا جو کہ بہادر میشکل ہے । چنانچہ، اس بارے میں ہجرت سی ہمیں دعویٰ ہے : ہر شاخہ کے پاس اک کاپی ہونی چاہیے، جس پر ہلاکت میں ڈالنے والے اعمّر اور نجات دئنے والی تمام سیفیت مجکور ہوں، نیز گناہوں اور نے کا آمالم کا بھی تجزیکرا ہو اور رہا جانا اس کی مدد سے اپنے محسوس با کرے । ^(۱) لیہاڑا ہم اپنے مظلوم آمالم کی فہرست رہا مرجا، حفتاوار، ماحنا اور سالانہ ایتیوار سے بنانے چاہیے فیر اس پر ہجرت سی ہمیں دعویٰ ہے : یہ کے مسخرے کے معتابیک نیشنات لگانے چاہیے ।

میٹے میٹے اسلامی بھائیو ! یہ ہکیکت ہے کہ ہر کوئی اسی فہرست بنانے کی سلایحیت نہیں رکھتا، جو اس کی دنیا کی آخریت کو بہتر بنانے کے اعمّر پر مسٹریل ہے، لیہاڑا ہم چاہیے کہ ہم پندرہوں

۱۔ احیاء علوم الدین، کتاب التفکر، بیان بخاری الفکر، واما النوع الرابع... الخ، ۵۲۲/۲

सदी की अःजीम इल्मी व रूहानी शख्सियत शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अःत्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ के अःताकर्दा मदनी इन्आमात के रसाइल (इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के लिये 40, जामिअतुल मदीना के तलबा के लिये 92, त़ालिबात के लिये 83, खुसूसी इस्लामी भाइयों के लिये 27 मदनी इन्आमात नामी रसाइल) हासिल करें, जो खुद एहतिसाबी का एक जामेअः और खुद कार निज़ाम हैं, इन को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में हाइल रुकावटें **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से आहिस्ता आहिस्ता दूर हो जाएँगी और इन की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुद्दने का ज़ेहन बनेगा।

مَدْنَى إِنْجَامَاتٍ ک्या हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नफ़्स चूंकि एक बे मुहार ऊंट की तरह है कि लम्हा भर इस से ग़ाफ़िल हों तो मा'लूम नहीं कहां से कहां जा पहुंचता है ! और शैतान जो हमेशा ऐसे ही नुफ़ूस की ताक में रहता है, इस मौक़अः से भरपूर फ़ाएदा उठाने की कोशिश करता है, बन्दा अगर संभल जाए और नफ़्स पर क़ाबू पा ले तो शैतान भाग जाता है वरना बन्दा नेकी की राह से दूर और बुराइयों के क़रीब होता चला जाता है यहां तक कि उसे मह़सूस ही नहीं होता कि वोह बा'ज़ अवक़ात कुफ़्र की अन्धेरी वादियों में जा गिरता है। चुनान्वे,

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने नफ़्सो शैतान के धोके और फ़रेब से बा ख़बर रहने का जो आसान तरीक़ा मुतअ़रिफ़ करवाया इसे मदनी इन्आमात का नाम दिया गया है। इन मदनी इन्आमात पर अ़मल से

ਮुराद नफ्स का मुहासबा करना और रोज़ाना येह देखना है कि आज क्या किया ? क्या नेकी के काम कर के कुर्बे खुदावन्दी हासिल करने में कामयाब हुए या नहीं ? और अगर कभी कोई अपने नामए 'आ'माल में नेकियों की कमी और गुनाहों की ज़ियादती पाए तो **अल्लाह** पाक से डरे और गुनाहों से तौबा करते हुए नेकियां बढ़ाने की कोशिश करे कि गुनाह के बा'द नेकी करना गुनाह को मिटा देता है । जैसा कि मरवी है कि एक मरतबा **अल्लाह** के प्यारे हबीब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نे हज़रते सच्चिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी سे इरशाद ف़रमाया : जहां भी रहो **अल्लाह** पाक से डरते रहो और गुनाह के बा'द नेकी कर लिया करो कि येह उसे मिटा देती है ।⁽¹⁾

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही बुरी आदतें भी छुड़ा या इलाही⁽²⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

مادنیٰ ڈنڈاً مات की درجाबद्धी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई हुसूले तक्वा की ख़ातिर कम खाने की आदत डालना चाहे तो यकबारगी खाना कम न करे बल्कि एक दिन छोड़ कर दूसरे दिन एक एक निवाला कम करता जाए आहिस्ता आहिस्ता कम खाने की आदत हो ही जाएगी । اِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ । लिहाज़ा हमें चाहिये कि दरजा ब दरजा अ़मल करना शुरूअ़ करें और अ़मल बढ़ाते जाएं । اِن شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ वोह वक्त भी आ जाएगा कि हम तमाम मदनी इन्ड्रामात के आमिल बन जाएंगे । मगर याद रहे ! फ़राइज़ो वाजिबात वगैरा शरई अहकामात पर फैरी अ़मल ज़रूरी है ।

ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء في معاشرة الناس، ص ۲۸۳، حدیث: ۱۹۸۷

[2]....वसाइले बरिशाश (मुरम्मम), स. 100

मदनी इन्डिया में उक्त नज़र में

मदनी इन्डिया	इस्लामी भाई	इस्लामी बहनें	जामिअतुल मदीना के		मदनी मुने	खुसूसी इस्लामी भाई	जेल के कैदियान	हज्जो उम्रा करने वालों के लिये
			तळबा	तळिबात				
यौमिय्या	50	47	67	60	29	17	41	19
हफ्तावार	8	3	8	4	2	4	2	---
माहाना	6	5	7	4	3	4	3	---
सालाना	8	8	10	6	6	2	6	---
उम्र भर	---	---	---	9	---	---	---	---
कुल मीज़ान	72	63	92	83	40	27	52	19

मदनी इन्डिया के मकासिद

﴿1﴾ **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल ﷺ की रिज़ा हासिल करना । **﴿2﴾** शरीअत पर अ़मल करने और सुन्नतों का पैकर बनने का जज्बा पैदा करना । **﴿3﴾** दीने इस्लाम की बुन्यादी बातें सिखाना और फिर इन बातों को आम करने के लिये मुबल्लिग़ीन तथ्यार करना । **﴿4﴾** गुनाहों के दलदल से निकालना और इबादत गुज़ार बनाना । **﴿5﴾** दिलों में इश्क़े मुस्त़फ़ा और औलियाए किराम की महब्बत पैदा करना । **﴿6﴾** अ़क़ाइद की मज़बूती और ईमान की हिफ़ाज़त करना । **﴿7﴾** अख़लाक़ संवारना और खौफ़े खुदा पैदा करना । **﴿8﴾** फुजूल कामों और फुजूल बातों से बचाना । **﴿9﴾** तिलावते कुरआने पाक का पाबन्द बनाना ।

کیا مادنیٰ ڈنامات پر اُمّل جڑکری ہے ؟

یہ نہ مسٹر فلڈ دار، ہر ترک سے گوناہوں کی یلگاڑا اور نےکیوں پر اُمّل دشوار، ان ہالات میں مادنیٰ ڈنامات پر اُمّل کے لیے اسرا ! کیا مادنیٰ ڈنامات پر اُمّل اس کدر جڑکری ہے ؟

میٹے میٹے اسلامیٰ بھائیو ! یہ کیون یہ اک وسوسا ہے جو بہت سے جہنوں میں خٹکتا ہوگا، کیونکی امیر اہل سُنّت، بانیے دا'ватے اسلامیٰ دامت برکاتہم العالیہ نے اس پور فیتن دار میں جو مادنیٰ ڈنامات اُنہاں فرمائے ہے ان میں آسانی سے نےکیا کرنے اور گوناہوں سے بچنے کے تریکے ہی تو دیے ہے اور یہ کوئی نیا تریکا نہیں، اسلام ہے امّت کا انداز، اگرچہ میڈیا دار کے مुتّابک جڑکر ہے، مگر اس نہیں کی یہ نیا ہو، جی ہاں ! سیرت مسٹفہ کے مُبَارَك پہلوؤں کا مُتّالا اُن کیجیے، گلماں کی کدم کدم پر تربیت، عَنْهُمُ الظَّهُونَ جن کے نام کے ڈنکے آج بھی بج رہے ہیں، جن کی پاکیجا جیندگی آج بھی ہمارے لیے مشتعل رہ ہے، جن کا انداز جیندگی رہے جنّت پر گام جن کرنے کے لیے آج بھی اک میسالی نمودنا ہے، جی ہاں ! یہ تربیت مسٹفہ کی ہی مادنیٰ بھارے ہے اسلامیٰ کیرام سادیوں سے اپنے موری دین، مُحیِّبین کی مادنیٰ تربیت کرتے چلے آ رہے ہیں، نیج شہزاد نہیں کبھی نہیں چاہے گا کی لوگ آسانی سے راہے ہک اپنا اے । چنانچہ، وہ تو اس کیس کے وسوسے دیلوں میں پیدا کرتا ہی رہتا ہے । لیہا جا اس ترک کے دیگر وسوسوں سے بھی جان چھوڑنے کے لیے بہتر ہے کہ ہم پہلے یہ دیکھ لے کی مادنیٰ ڈنامات آخیر ہے کیا ؟ اور شہزاد کیون چاہتا ہے کہ ہم اس پر اُمّل سے دور رہے । چنانچہ، اس مادنیٰ ڈنامات کا جاؤ جا لے تو ترتیب کوچ یون بناتی ہے :

- ❖ बा'ज़ मदनी इन्डिया मात फ़राइज़ो वाजिबात पर मुश्तमिल हैं या'नी शरई तौर पर हर मुसलमान पर लाज़िम हैं और इन पर अमल न करने की सूरत में आखिरत में शदीद पकड़ की वईद है। जैसा कि फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी (मसलन पांचों नमाजें, माहे रमज़ान के रोज़े हर बालिग मर्द व औरत मुसलमान पर फ़र्ज़ हैं) और हराम कर्दा चीज़ों से इजतिनाब। (मसलन झूट, ग़ीबत, बद निगाही वगैरा से बचना)
- ❖ कुछ मदनी इन्डिया मात सुन्नतों और मुस्तहब्बात की अदाएगी पर मुश्तमिल हैं। मसलन ❁ फ़त्र, ज़ोहर, अस्स और इशा की सुन्नते क़बलिय्या और फ़र्ज़ों के बा'द वाले नवाफ़िल वगैरा अदा करना ❁ तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन ❁ तहिय्यतुल वुजू और तहिय्यतुल मस्जिद अदा करना।
- ❖ बा'ज़ मदनी इन्डिया मात ज़बान और निगाह की हिफ़ाज़त के तरीकों पर मुश्तमिल हैं। मसलन ❁ हत्तल मक्दूर निगाहें नीची रखना ❁ फुजूल गोई की आदत निकालने के लिये ज़रूरी गुफ़तगू भी कम लफ़ज़ों में या लिख कर करना वगैरा।
- ❖ बा'ज़ मदनी इन्डिया मात ऐसे हैं, जिन का तअ़्लुक़ मुतालए से है, मसलन ❁ बहारे शरीअत ❁ मिन्हाजुल आबिदीन के मख्सूस अबवाब ❁ तम्हीदुल ईमान व हुस्सामुल हरमैन, कुफ़िय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब और चन्दे के बारे में सुवाल जवाब ❁ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के तमाम मदनी रसाइल पढ़ना या सुनना वगैरा।
- ❖ बा'ज़ मदनी इन्डिया मात ऐसे गुनाहों से बचने का मदनी ज़ेहन देते हैं जो मुआशरे में आम हैं और जिन की तरफ़ हमारी तवज्जोह नहीं। मसलन ❁ राज़ की बात की हिफ़ाज़त करना ❁ तोहमत व गाली गलोच ❁ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, हसद, तकब्बुर, वा'दा खिलाफ़ी ❁ फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों वगैरा से खुद को महफूज़ रखना।

✿ ਬਾ'ਜ਼ ਮਦਨੀ ਇਨਾਮਾਤ ਅਖੂਲਕੀ ਨਿਖਾਰ ਪੈਦਾ ਕਰਨੇ ਸੇ ਸੁਤਅਲਿਕ ਹੈਂ। ਜੈਂਸੇ ਝੂਲ੍ਹਾ ਗੁਸ਼ਾ ਆ ਜਾਨੇ ਪਰ ਚੁਪ ਸਾਧ ਕਰ ਦਰਗੁਜ਼ਰ ਸੇ ਕਾਮ ਲੇਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਜੀ ਕਹਨੇ ਕੀ ਆਦਤ ਡਾਲਨਾ ਝੂਲ੍ਹੇ ਦੂਸਰੇ ਕੀ ਬਾਤ ਸੁਨਨੇ ਕੇ ਬਜਾਏ ਤਥਾਕਾਰ ਸੇ ਬਚਤੇ ਹੁਏ ਆਪ ਜਨਾਬ ਸੇ ਗੁਪਤਗ੍ਰੂ ਕੀ ਆਦਤ ਡਾਲਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਕਹਕਹਾ ਲਗਾਨੇ ਸੇ ਗੁਰੇਜ਼ ਕਰਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਫੁਜ਼ੂਲ ਬਾਤ ਮੁਹੱ ਸੇ ਨਿਕਲਨੇ ਪਰ ਇਸ਼ਟਿਗਫ਼ਾਰ ਯਾ ਦੁਰੂਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਪਢਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਹਪਤੇ ਮੌਂ ਕਮ ਅਜੁਕਮ ਏਕ ਮਰੀਜ਼ ਯਾ ਦੁਖੀ ਕੀ ਘਰ ਯਾ ਅਸਥਾਤਾਲ (*Hospital*) ਜਾ ਕਰ ਗੁਮ ਖ਼ਵਾਰੀ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਤਾ'ਵੀਜ਼ਾਤੇ ਅੜਾਰਿਅਧਾ ਕੀ ਤਰਗੀਬ ਦਿਲਾਨਾ ਔਰ ਝੂਲ੍ਹੀ ਘਰ ਮੌਂ ਮਦਨੀ ਮਾਹੋਲ ਬਨਾਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ “**19** ਮਦਨੀ ਫੂਲਾਂ” ਕੇ ਸੁਤਾਬਿਕ ਮਾ'ਮੂਲ ਬਨਾਨਾ ।

✿ ਬਾ'ਜ਼ ਮਦਨੀ ਇਨਾਮਾਤ ਐਂਸੇ ਭੀ ਹੈਂ ਜੋ ਮਦਨੀ ਮਾਹੋਲ ਕੀ ਬਰਕਤ ਸੇ ਤਨ੍ਜੀਮੀ ਤੌਰ ਪਰ ਪਹਲੇ ਹੀ ਨਾਫਿਜ਼ ਹੈਂ ਔਰ ਜਿਨ ਕੀ ਮਾਹਾਨਾ ਕਾਰਕਦੰਗੀ ਲੇਨੇ ਕਾ ਸਿਲਸਿਲਾ ਭੀ ਜਾਰੀ ਹੈ । ਮਸਲਨ ਝੂਲ੍ਹੀ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦੋ ਮਦਨੀ ਦਰਸ ਦੇਨਾ ਯਾ ਸੁਨਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਕਮ ਅਜੁਕਮ ਦੋ ਇਸ਼ਲਾਮੀ ਭਾਇਯੋਂ ਕੋ ਮਦਨੀ ਇਨਾਮਾਤ ਔਰ ਮਦਨੀ ਕਾਫ਼ਿਲੇ ਮੌਂ ਸਫਰ ਕੀ ਤਰਗੀਬ ਦਿਲਾਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਮਦਨੀ ਕਾਮੋਂ ਮੌਂ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਕਮ ਅਜੁਕਮ ਦੋ ਬਨ੍ਤੇ ਸਾਰ੍ਫ਼ ਕਰਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਮਦਸਤੁਲ ਮਦੀਨਾ (*ਬਾਲਿਗਾਨ*) ਮੌਂ ਪਢਨਾ ਯਾ ਪਢਾਨਾ, ਨੀਜੁਫ਼ਾਰਿਗ ਹੋਤੇ ਹੀ ਇਸ਼ਾ ਕੀ ਜਮਾਅਤ ਸੇ ਦੋ ਬਨ੍ਤੇ ਕੇ ਅਨਦਰ ਘਰ ਪਹੁੰਚਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਕਿਸੀ ਏਕ ਯਾ ਚੰਦ ਏਕ ਸੇ ਦੋਸਤੀ ਗਾਂਠਨੇ ਸੇ ਬਚਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਮਰਕਜ਼ੀ ਮਜ਼ਾਲਿਸੇ ਸ਼ੂਰਾ, ਦੀਗਰ ਮਜ਼ਾਲਿਸ ਔਰ ਅਪਨੇ ਨਿਗਰਾਨ ਕੀ ਇਤਾਅਤ ਕਰਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਕਿਸੀ ਸੇ ਇਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਕੀ ਸੂਰਤ ਮੌਂ ਦੂਸਰਾਂ ਪਰ ਇਜ਼ਹਾਰ ਨ ਕਰਨਾ ਝੂਲ੍ਹੀ ਜੋ ਪਹਲੇ ਆਤੇ ਥੇ ਮਗਰ ਅਥ ਨਹੀਂ ਆਤੇ, ਏਸੋਂ ਸੇ ਤਨ੍ਜੀਮੀ ਤਰਕੀਬ ਕੇ ਸੁਤਾਬਿਕ ਤਨ ਕੀ ਵਾਬਸਤਗੀ ਕੇ ਲਿਯੇ ਕੋਣਿਅਤ ਕਰਨਾ ਔਰ ਝੂਲ੍ਹੀ ਦੌਰਾਨੇ ਗੁਪਤਗ੍ਰੂ ਦਾ'ਵਤੇ ਇਸ਼ਲਾਮੀ ਕੀ ਇਸ਼ਟਿਲਾਹਾਤ ਕਾ ਇਸ਼ਟਿ'ਮਾਲ, ਨੀਜੁ ਤਲਫ਼ੁਜ਼ ਕੀ

दुरुस्ती के लिये कोशिश करना ﷺ हफ्तावार इजतिमाअू में अव्वल ता आखिर शिर्कत, सारी रात ए'तिकाफ़ ﷺ बा'दे इजतिमाअू इनफ़िरादी कोशिश करने के लिये मुलाक़ात ﷺ मदनी दौरे में शिर्कत ﷺ नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल मक्तूब भेजना ﷺ हफ्तावार तरबियती मदनी हल्के में शिर्कत ﷺ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्डिया मात का रिसाला पुर कर के अपने ज़िम्मेदार को हर माह यकुम तारीख़ को जम्म उम्र करवाना ﷺ जदवल के मुताबिक़ हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस मुख्तसर मदनी जाइज़े से मा'लूम हुवा कि मज़कूरा मदनी इन्डिया में से हर मदनी इन्डिया नेकियां कमाने का एक आसान ज़रीआ है और चूंकि शैतान हमारा दुश्मन है जो कभी नहीं चाहता कि हम उख़रवी कामयाबी हासिल कर सकें, लिहाज़ा वोह इन आसान ज़रीओं को भी मुश्किल बना कर हमारे सामने पेश करता रहता है । इस लिये हिम्मत न हारिये, बल्कि दा'वते इस्लामी की शैतान के खिलाफ़ जारी जंग में भरपूर शरीक रहिये कि अगर इख़्लास के साथ कोशिश करेंगे तो इन मदनी इन्डिया मात पर भी ब आसानी अमल कर सकेंगे । चुनान्वे,

72 मदनी इन्डिया मात उक्त नज़र में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन 72 मदनी इन्डिया मात को अगर मौज़ूआती तरतीब दें तो सूरत कुछ यूं बनेगी : ◊ 13 मदनी इन्डिया इबादत से मुतअल्लिक़ ◊ 10 गुनाहों से बचाने से ◊ 11 अख़्लाक़िय्यात से ◊ 19 तन्ज़ीमी व मदनी कामों से ◊ 9 मुतालए से ◊ 6 कुफ़ले मदीना से और ◊ 3 मुस्तहब कामों से मुतअल्लिक़ हैं ।

इबादत से मुतब्लिक़ मदनी इन्ड्रामात

(जैल के कोलम्ज में लिखी गई गिनती से मुराद मदनी इन्ड्राम नम्बर है)

『13 मदनी इन्ड्रामात』 यौमिय्या : 11, हफ्तावार : 1, सालाना : 1

(2) पांचों नमाजें	(5) औरादे वज़ाइफ़	(20) तहिय्यतुल वुजू	(44) दुआ में खुशबू व खुजूअ़
(3) आयतुल कुरसी	(18) सुनतें क़बलिय्या	(21) तीन आयात की तिलावत	(58) पीर शरीफ़ का रोज़ा (हफ्तावार मदनी इन्ड्राम)
(4) अज़ानो इक़मत का जवाब व चाश्त और अव्याबीन	(19) तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्याबीन	(39) बा वुजू	(70) कुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म (सालाना मदनी इन्ड्राम)
(16) सलातुतौबा			

गुनाहों से बचाने से मुतब्लिक़ मदनी इन्ड्रामात

『10 मदनी इन्ड्रामात』, यौमिय्या : 10

(26) इनफिरादी कोशिश के ज़रीए इस्लाह	(30) शरई पर्दा	(33) तोहमत से बचना
(41) क़र्ज़ की अदाएगी	(28) गुस्से का इलाज	(31) फ़िल्मों ड्रामों से बचना
(38) झूट, ग़्रीबत से बचना	(42) ऐबों की पर्दापोशी	(45) रियाक़री, निफ़्क़ से बचना
(48) दिल आज़री		

अख्लाकिय्यात से मुतब्लिक़ मदनी इन्ड्रामात

『11 मदनी इन्ड्रामात』, यौमिय्या : 9, हफ्तावार : 1, माहाना : 1

(6) मुसलमानों को सलाम	(8) ﴿إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ مَا شَاءَ﴾ का इस्ति'माल	(25) सुवाल (मांगने) से बचना
(34) बात काटने से बचना	(7) आप, जी कह कर बात करना	(9) सलाम का जवाब देना
(53) इयादत (हफ्तावार)	(37) घरों में झांकने से बचना	(43) यक्सां तअल्लुक़त रखना
(27) पर्दे में पर्दा, क़िल्ला रुख़ बैठने का एहतिमाम करना	(62) कम से कम 112 रुपे इमाम साहिब को पेश करना (माहाना)	

तन्जीमी व मदनी कामों से मुतझिलक मदनी इन्ड्रामात

(19 मदनी इन्ड्रामात), यौमिया : 9, हफ्तावार : 6, माहाना : 3, सालाना : 1

(51) हफ्तावार सुनतों भरा इज्तिमाअः	(54) मदनी दौरा (हफ्तावार)	(52) 4 पर इनफिरादी कोशिश (हफ्तावार)
(55) दोबारा मदनी माहोल से बाबस्ता (हफ्तावार)	(47) हफ्तावार मदनी मुज़ाकरा	(57) मक्तूब रखाना (हफ्तावार)
(59) मदनी इन्ड्रामात क्व रिसाला जम्ख करवाना (माहाना)	(67) एक माह मदनी क़ाफ़िला (सालाना)	(60) यौमे कुप़ले मदीना, 3 दिन मदनी क़ाफ़िला (माहाना)
(61) इनफिरादी कोशिश (रिसाला जम्ख, मदनी क़ाफ़िला सफ़र) (माहाना)	(10) तन्जीमी इस्तिलाहात का इस्ति'माल	
(12) दो मदनी दर्स	(15) 12 मिनट फ़िक्रे मदीना	(13) मद्रसतुल मदीना बालिगान
(22) इनफिरादी कोशिश	(23) दो घन्टे मदनी काम	(24) निगरान की इत्ताअः
(32) घर में मदनी माहोल	(35) सदाए मदीना	(50) मदनी हुल्या

मुतालए से मुतझिलक मदनी इन्ड्रामात

(9 मदनी इन्ड्रामात), यौमिया : 1, माहाना : 2, सालाना : 6

(14) 12 मिनट मुतालआ	(64) अज़ान, 10 सूरतें याद (माहाना)	
(66) पेम्फ़लेट मुतालआ (सालाना)	(69) बहारे शरीअत (सालाना)	(63) दुआएं याद (माहाना)
(65) रसाइल मुतालआ (सालाना)	(68) मिहाजुल आबिदीन (सालाना)	(71) तह्हीदुल ईमान (सालाना)
(72) नमाज़ के अहकाम मुतालआ, दोहराई (सालाना)		

कुप़ले मदीना से मुतझिलक मदनी इन्ड्रामात

(6 मदनी इन्ड्रामात), यौमिया : 6

(11) पेट का कुप़ले मदीना	(36) साइन बोर्ड, आंखों का कुप़ले मदीना
(46) चार बार लिख कर ज़बान का कुप़ले मदीना	(29) फुज़ूल सुवालात से बचना
(40) निगाहें नीची, मुखात़ब से गुफ़तगू	(49) कम से कम अल्फ़ाज़ में गुफ़तगू

मुस्तहब क्वामों से मुतझ़लिक़ मदनी इन्डिया

(3) मदनी इन्डिया, यौमिय्या : 3

(1) अच्छी अच्छी नियतें	(17) चर्टाई का इस्त' माल	(47) मदनी चैनल देखना (1 घण्टा 12 मिनट)
------------------------	--------------------------	--

चन्द मदनी इन्डिया के तिब्बी व साइन्सी फ़्वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी इन्डिया के अगर्चे दीनी व दुन्यावी फ़्वाइद शुमार से बाहर हैं, मगर यहां इख़ितासर के पेशे नज़र चन्द मदनी इन्डिया के तिब्बी व साइन्सी फ़्वाइद मुलाहज़ा फ़रमाइये :

❖ मदनी इन्डिया नम्बर 2 के मुताबिक़ नमाज़ की बरकत से बन्दा दिमाग़ी (Mental), आ'साबी (Neural) और नफ़िसयाती अमराज़ (Psychological Diseases) नीज़ जोड़ों के दर्द (Joints pain), मे'दे के अल्सर (Stomach Ulcers), शूगर (Diabetes), फ़ालिज (Paralysis) ब्लड प्रेशर (Blood pressure), आंखों और गले के अमराज़ (Eyes and Throat Diseases) से भी महफूज़ हो जाता है। दुरुस्त तरीके से नमाज़ की अदाएंगी कोलेस्ट्रोल (Cholesterol) की मिक्दार को नोर्मल (Normal) रखने का एक मुस्तकिल और मुतवाज़िन ज़रीआ है। नमाज़ की हालते कियाम में रीढ़ की हड्डी (Backbone) को सुकून मिलता है और रुकूअ़ करने से कमर दर्द (Back ache) से नजात मिलती है। पेट के उँगलात, मे'दे और आंतों का निजाम बेहतर होता और पथरी बनने का अ़मल सुस्त हो जाता है। नमाज़ से घुटने और कोहनियों के जोड़ मज़बूत होते हैं। नमाज़ गर्दन और शानों के पड़ों के लिये बेहतरीन वरज़िश (Exercise) है।

नमाज़ों में मुझे हरगिज़ न हो सुस्ती कभी आक़ा पहुँचांचों नमाज़ें बा जमाअत या रसूलल्लाह⁽¹⁾

❖ मदनी इन्ड्राम नम्बर 11 के मुताबिक़ मिट्टी के बरतनों (Earthenware) में पका हुवा खाना स्टील और दूसरी धातों (Metals) में पके खाने की निस्बत जियादा देर तक अपनी अफ़ादियत क़ाइम रखता है। माहिरीन (Experts) के मुताबिक़ नोनस्टिक (Non-stick), तांबे (Copper), पीतल (Brass) और स्टील के बरतनों का इस्ति'माल सिफ़्हत के लिये मुज़िर है।

मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं चटाई का हो बिस्तरा या इलाही⁽²⁾

नीज़ इसी मदनी इन्ड्राम पर अ़मल के लिये खाने से पहले भूक लगी होना ज़रूरी है कि जो कोई खाना शुरूअ़ करते वक़्त भी भूका हो और अभी भूक बाकी हो और हाथ खींच ले वोह हरगिज़ तबीब का मोहताज न होगा।⁽³⁾ जदीद तहकीक के मुताबिक़ कम खाने से इन्सान जल्द बूढ़ा (Old) नहीं होता, बल्कि तबील अ़से तक जवान (Young) नज़र आता है।⁽⁴⁾ मुंह के छालों (Mouth ulcers) और तक़रीबन 80 फ़ीसद बीमारियों का इलाज कम खाने में है।⁽⁵⁾ हमेशा खाना कम खाने की सआदत हासिल कर के भूक की बरकतें लूटने से ﴿نُشَاعَةٌ﴾ टांगों और बदन के मुख्तलिफ़ हिस्सों के दर्द (Pain), कब्ज़ (Constipation), सीने की जलन (Heartburn), मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़ले (Flu), खांसी (Cough), गले के दर्द और मसूदों में खून

[1]....वसाइले बरिशाश (मुरम्मम), स. 330

[2]....वसाइले बरिशाश (मुरम्मम), स. 393

[3]....फैज़ाने सुन्त, बाब पेट का कुफ़्ले मदीना, 1 / 643

[4]....घरेलू इलाज, स. 10 ब हवाला रोज़नामा आग़ाज़, 5 दिसम्बर 2007 मुल्तक़त़न

[5]....घरेलू इलाज, स. 59

आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ मुंह की बदबू से भी जान छूट जाती है।⁽¹⁾

ज़बां का, आंख का और पेट का कुफ्ले मदीना तुम

लगा लो वरना महशार में पशेमानी बड़ी होगी⁽²⁾

❖ मदनी इन्डिया नम्बर 19 के मुताबिक़ तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने से बुद्धापा देर से आता और चेहरा नूरानी हो जाता है।

❖ मदनी इन्डिया नम्बर 21 के मुताबिक़ रोज़ाना तीन आयाते मुबारका की तिलावत से जहां दिल में कलामे खुदावन्दी की महब्बत पैदा होती है, वहीं मुख्खलिफ़ आयाते मुबारका और सूरतों की तिलावत से ख़ास बरकतों का नुज़ूल होता और बीमारियों (Diseases) से नजात भी मिलती है कि बिलाशुबा कुरआने करीम सारे का सारा बाइसे शिफ़ा है। मसलन सूरए फ़तिहा पढ़ कर मरीज़ पर दम करने से आराम हो जाता है और आंख का दर्द बहुत जल्द अच्छा हो जाता है।⁽³⁾ सूरए कहफ़ को हमेशा पढ़ने वाला बर्स व जुज़ाम (Leprosy)⁽⁴⁾ और बला से महफूज़ रहेगा। सोते वक्त सूरए नूर को तीन बार पढ़ने से एहतिलाम से हिफ़ाज़त रहती है। बीमार को तीन रोज़ तक सूरए क़स्स पढ़ के पानी पर दम कर के पिलाएं۔^{عَلَيْهِ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ مُبِينٌ} शिफ़ा होगी बिल खुसूस जुज़ाम दूर

[1]....घरेलू इलाज, स. 69 ब तसरूफ़

[2]....वसाइले बख़्शाश (मुरम्मम), स. 393

[3]....जनती जैवर, स. 588

[4]....या'नी ऐसा मरज़ जिस से जिस्म सफेद हो जाता है और मरज़ की शिद्दत में आ'ज़ा भी गल जाते हैं (उर्दू लुग़त बोर्ड कराची, 6 / 554)

करने के लिये बहुत मुफ़ीद है। जिसे फोड़े (Pimples) निकलते हों वोह रोज़ाना सूरए मोमिन को एक बार पढ़ लिया करे ﴿إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَا يَرِيدُ﴾ इफ़क़ा का होगा।⁽¹⁾

दे शौके तिलावत दे ज़ौके इबादत रहूं बा बुजू मैं सदा या इलाही⁽²⁾

❖ मदनी इन्ड्राम नम्बर 35 के मुताबिक़ सदाए मदीना लगाते हुए पैदल चलना सिह्हतमन्दी की अलामत है। क्यूंकि पैदल चलना मुख्तलिफ़ किस्म की बीमारियों (हार्ट अटेक Heart Attack, फ़ालिज, लक्वा, दिमाग़ी अमराज़, हाथ पाड़ और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां, मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज़, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लड प्रेशर, जिगर और पित्ते के अमराज़ वगैरा) से बचाता है। मज़ीद येह कि इस से वज़न ए'तिदाल में रहता, हड्डियां मज़बूत होती और तमाम आ'ज़ा बेहतर तौर पर काम करते हैं।⁽³⁾

“सदाए मदीना” दूं रोज़ाना सदक़ा अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही⁽⁴⁾

❖ मदनी इन्ड्राम नम्बर 38 के मुताबिक़ सच बोलने से जिस्मानी और दिमाग़ी सिह्हत बेहतर होती है, एक रिपोर्ट में कहा गया है कि झूट बोलना इन्सान की सिह्हत को मुतअस्सिर करता और बे ख़बाबी व अल्पर का सबब बनता है। नीज़ झूट बोलने वाले हक़ाइक़ को छुपाने की वज्ह से नफ़्सियाती दबाव (Depression) का शिकार हो जाते हैं। लिहाज़ा सच बोल कर इन तमाम आफ़ात से बचा जा सकता है।

हसद, वा 'दा खिलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबतो तोहमत

मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह⁽⁵⁾

1....जननती ज़ेवर, स. 592 ता 596 माखूज़न

2....वसाइले बरिशश (मुरम्मम), स. 102

3....सदाए मदीना, स. 16, 17 व तसरूफ़

4....वसाइले बरिशश (मुरम्मम), स. 103

5....वसाइले बरिशश (मुरम्मम), स. 332

❖ مادنیٰ ڈنڈاً مات نمبر 39 کے مुتابریک دین کا اکسرار ہیسسا بہ وujū رہنے سے ہائی بلڈ پریشر (High Blood Pressure) کنٹرول (Control) ہوتا ہے । اک ہارت سپیشیالیست (Heart Specialist) کا بडے وسوسک (یا' نی اُتیماڈ) کے ساتھ کہنا ہے : ہائی بلڈ پریشر کے ماریج کو وujū کرવاؤ فیر یہ کا بلڈ پریشر چک (Check) کرو لاجیمن کم ہوگا । اس کے یلاؤ نفیسیاتی امراراج کا بہترین یلاؤ وujū ہے । مگریبی ماہیرین نفیسیاتی ماریجوں کو وujū کی ترہ روجانہ کریں بار بدن پر پانی لگवاتے ہیں । وujū میں آجڑا ڈونے کی ترتیب فلیج کی روک ٹام کے لیے مufid ہے । اگر اس ترتیب کا لیہاچ کیے بیگڑ چہرا (Face) ڈونے اور مسح کرنے سے آگاچ کیا جائے تو بدن کریں بیماریوں میں موبلاہ ہو سکتا ہے ।⁽¹⁾

❖ مادنیٰ ڈنڈاً مات نمبر 50 کے مुتابریک مادنیٰ ہولیا اپناتے ہوئے یہاں شاریف پہننا درد سر (Headache) کے لیے بہت مufid ہے । اس سے دیماگ (Brain) کو تکیویت میلتی اور ہافیچا مچبتو ہوتا ہے । اسے باندھنے سے دایمی نچلنا نہیں ہوتا، اگر ہوتا بھی ہے تو اس کے اسراط کم ہوتے ہیں । یہاں شاریف کا شیملہ ہرام ماجھ کو مائیمی اسراط مسالن سدھیں گے وغیرا سے تھفہ کر رہا ہے اور سرسام (یا' نی دیماگ کے وارم) کے مرج کے خرگوش میں کمی لاتا ہے ।⁽²⁾

لیباں اپنا سونت سے آرائیا ہے یہاں سر پر سجا یا یلاؤ⁽³⁾

[1]....نماچ کے اہکام، وujū اور سائنس، س. 69-70 ب تسریک

[2]....163 مادنیٰ فول، س. 27 ب ہوالا ۳۹ ص۔ کشف الالتباس فی استحباب للشيخ عبد الحق الدھلوی

[3]....وہ سائلہ برشیش (میرمہم)، س. 104

✿ दाढ़ी शरीफ़ रखने से फ़ोली क्लीटिस बारबे (*Folliculitis barbae*) नामी बीमारी से आफ़ियत रहती है, इस बीमारी का ख़तरा शेव (*Shave*) के दौरान जिल्द पर आने वाले ज़ख्म से बढ़ जाता है। जब सुन्ते रसूल चेहरे पर सजाई होगी तो येह बीमारी क़रीब भी न आएगी ﴿إِنْ شَاءَ اللَّهُ﴾। इस की बदौलत एलर्जी (*Allergy*) से हिफ़ाज़त रहती है क्यूंकि दाढ़ी और मूँछों के बाल गर्दे गुबार (*Dust*) और पोलन ज़र्रात (*Pollen Grains*) को अपनी तरफ़ खींच लेते हैं इस तरह वोह नाक और मुंह में नहीं जा पाते। चेहरे के बाल जिल्द (*Jild*) को सूरज की अल्ट्रावायोलेट शुआओं (*Ultraviolet Rays*) से बचाते और जिल्द के केन्सर (*Cancer*) से 90 से 95 फ़ीसद तक तहफ़कुज़ फ़राहम करते और दमा (*Asthma*) के जरासिमों (*Germs*) से फेफड़ों (*Lungs*) की हिफ़ाज़त करते हैं।

सभी रुख़ ये इक मुश्त दाढ़ी सजाएं बनें आशिक़े मुस्तफ़ा या इलाही⁽¹⁾

✿ सफेद लिबास पहनने से गर्मी की शिद्दत में कमी वाकेअ़ होती है।⁽²⁾

✿ अमेरीका में इन्सानी सिहृत के मुतअल्लिक की गई एक तहकीक में कहा गया कि लिबास को टख्नों (*Ankles*) से ऊपर लटकाओ ऐसा करने से टख्नों में वरम (*Swelling*), जिगर के अन्दरूनी वरम और पागल पन से हिफ़ाज़त रहती है। क्यूंकि बा'ज़ शिरयानें (*Arteries*) और वरीदें (*Veins*) ऐसी होती हैं जिन्हें हवा और पानी की अशद ज़रूरत होती है अगर येह न मिलें तो बीमारियां

1....वसाइले बस्तिश (मुर्मम), स. 104

2....गर्मी से हिफ़ाज़त के मदनी फूल, स. 10 माखूज़न

लगने का ख़तरा बढ़ जाता है। ❁ कोलर (Collar) के बिंगेर क़मीस पहनने से दिमाग़ और आंखों की कमज़ोरी (Weakness), बे ख़्वाबी (Sleeplessness), बालों के गिरने, गन्जे पन (Baldness) और पागल पन (Insanity) से हिफ़ाज़त रहती है। इस लिये कि दिमाग़ में ख़ून की सप्लाई (Supply) दिमाग़ी शिरयानों से होती है और कोलर (Collar) से उन शिरयानों में दबाव बढ़ने के सबब ख़ून की गरदिश में कमी वाकेअ़ हो जाती है।

उन की सुन्त का जो आईनादार है बस वोही तो जहां में समझदार है⁽¹⁾

❁ स्वीडन (Sweden) के साइन्सदानों की एक तहकीक (Research) के मुताबिक़ मिस्वाक के रेशे बैक्टेरिया (Bacteria) को छूए बिंगेर बराहे रास्त (Direct) ख़त्म कर देते हैं और दांतों को कई बीमारियों से बचाते हैं। ये ह दांतों और मुँह की सफ़ाई नीज़ मसूढ़ों की सिफ़्हत का बेहतरीन ज़रीआ है। एटलान्टा (Atlanta) अमेरीका में दांतों से मुतअल्लिक़ होने वाली एक निशस्त में बताया गया कि मिस्वाक में ऐसे मादे (Substances) होते हैं जो दांतों को कमज़ोरी से बचाते हैं और वोह तमाम दवाएं जो दांतों की सफ़ाई में इस्त'माल होती हैं, इन सब से ज़ियादा फ़ाएदे मन्द मिस्वाक है।⁽²⁾ मिस्वाक से कुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ती, दर्दे सर (Headache) दूर होता और सर की रगों को सुकून मिलता है। इन के इलावा नज़र तेज़, मे'दा (Stomach) दुरुस्त और खाना

^[1]...वसाइले बस्त्रिया (मुरम्म), स. 472

^[2]...मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 7 ब तसरूफ़

ہجّم ہوتا ہے، اُکٹل بढ़تی، بچھوں کی پैदائیش مें اِज़ाفَۃ ہوتا، بُعدَّاپا دेर مें آتا اور پीठ مजْبُوت ہوتی ہے।⁽¹⁾

یہ اکسر سا� ان کے شاناً اُو میسواک کا رہنا

بतاتا ہے کی دلرےشون پے جاہد مہربانی ہے⁽²⁾

مُشِكَلَ الْأَلْفَاظُ كَمَّا : شَانَةٌ : كَمْبَةٌ | دِلَرَشَونْ : جَرْبَةٌ دِلَ وَالْوَلَهُ |

شَرْهَ كَلَامَ رَجَاءٌ : سَرَكَارَ مَدِيَنَا، كَرَارَ كَلَبُو سَيِّنَا عَلَى اللَّهِ تَكَالِ عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کی
اُداتے مُبَارکا ثُریٰ کی کَمْبَة اُو میسواک شَرِيف اکسر اپنے ساٹھ رکھتے ٿئے،
کَمْبَے مِنْ دَنْدَانَ اُو میسواک مِنْ رَشَوْ ہوتے ہُنّ، اِس سے سَابِیت ہوتا ہے کی آپ
کَمْبَهُنْ کو دلرےشون پے جَرْبَةٌ دِلَ وَالْوَلَهُ سے مَحْبَبَت ٿئی ۔

✿ مَدْنَى إِنْبَأَ نَمْبَر 58 کے مُعْتَابِکِ هر پیار شَرِيف (یا رہ جانے کی
سُورَت مِنْ کیسی ٻھی دِن) کا رَوْجَاء رکھنے مِنْ دَه کی تکالیف اُو بَیْمَارِیَوْ مِنْ
مُفَارِد ہے । کی رَوْجَاء رکھنے سے نِیِّاجَہ هجّم بَهْتَر، شُوگَر لَےَوَل (Sugar
Level)، کُولَےِسْٹَرُول (Cholesterol) اُو بلڈ پَرَسَار مِنْ اَتِیدَالِ رہتا ہے،
مَجْدِیَد یہ کی دِل کا دَوَرَا پَدَنے کا خَطَرَا نَہْرَنَ رہتا کَبُونْکِ رَوْجَاء کے دَوَرَا ن
خُون کی مِکَدَار مِنْ کَمَیٰ ہو جاتی ہے اُو دِل کو اِنْتِہاَرِ فَاءِ اَدَمَنْد آرَام
پَھُونْچتا ہے । رَوْجَاء سے جِسْمَانِی خِیْچَاوَ، جَهْنَمِی تَنَاوَ، دِپَرَشَن (Depression)
اُو نَفِیْسَیَاتِی اَمَرَاجُ کا خَاتِمَا ہوتا، مُوٹَاوَے مِنْ کَمَیٰ اُو اِجَاضَہِ چَبَرَی

[1]....نَمَاءٌ کے اَهْکَام، س. 72 ب تَسْرُفُ بِهَوَالَا

حاشیة الطھطاوی على مراتق الفلاح، كتاب الطھراۃ، نصلی فی سنن الوضوء، ص ۱۹

[2]....ہدایکے بخیشان، س. 191

ख़त्म हो जाती है। रोज़ा रखने से बे औलाद ख़वातीन के हां औलाद होने के इमकानात कई गुना बढ़ जाते हैं।⁽¹⁾

कर लो नियत ख़ूब कोशिश कर के हम अपना अमल

मदनी इन्डिया पर हर दम बढ़ाते जाएंगे⁽²⁾

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क्या मदनी इन्डिया पर अमल मुश्किल है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह एक वस्वसा है, जिसे फौरन जेहन से झटक दीजिये क्यूंकि मदनी इन्डिया पर अमल कृतअन मुश्किल नहीं, बल्कि अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी खुद मदनी इन्डिया के रिसाले की तरगीब दिलाते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : मदनी इन्डिया में मौजूद कई मदनी इन्डिया पर आप का पहले से (Already) अमल होगा। आप मदनी इन्डिया के रिसाले को हासिल फ़रमा कर इस को एक बार पढ़िये तो सहीह ! फिर आप जान जाएंगे कि इस को नेक बनने का नुसखा क्यूं कहा जाता है !!!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर बा'ज़ मदनी इन्डिया मुश्किल भी महसूस हों तो हिम्मत रखिये ! क्यूंकि ग़ालिबन आप को तजरिबा होगा कि सख्त सर्दी के बहाव वुजू के लिये बैठते हैं तो सर्दी से दांत बजते हैं फिर हिम्मत कर के जब वुजू शुरूअ़ कर देते हैं तो इब्तिदाअन ठन्डक ज़ियादा महसूस होती है मगर फिर ब तदरीज कम हो जाती है। हर मुश्किल काम का येही उसूल है

[1]....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तहतुल आयत : 184, 1 / 293 ब तसरूफ़

[2]....वसाइले बरिधाश (मुरम्मम), स. 419

مسالن کیسی کو کوئی خُترناک بیماری لگ جائے تو وہ بےچن ہو جاتا ہے، مگر رپٹا رپٹا جب آدمی ہو جاتا ہے تو کुਕھتے برداشت بھی پیدا ہو جاتی ہے۔ لیہاڑا فُرین سے پہلے تر ہم میں مادنیٰ ہنڈاً مات کا رسالہ مکتبتوں میں اپنے کیسی بھی شاخ سے ہدیتیں ہاسیل کر لئے چاہیے اور مادنیٰ ہنڈاً نمبر 15 : کیا آج آپ نے یک سوہنے کے ساتھ کم از کم 12 مینٹ فیکرے میں اپنے امام کا محسوسہ کر رہے ہیں؟ جن جن مادنیٰ ہنڈاً مات پر اُمالم ہو گا رسالے میں ان کی خانہ پوری فرمائی؟ کے موتا بیک اُمالم شرکت کر دے گا چاہیے । إِنْ شَاءَ اللَّهُ طَرِيقٌ آہیستا آہیستا اُمالم میں یہاں کے ساتھ دل میں گناہوں سے نفرت محسوس ہو گی । ہو سکتا ہے کہ کسی کو مادنیٰ ہنڈاً مات مُشکل ماؤں ہوں مگر ہممت نہ ہاریے..... بالکل یہ فرمائے مُسٹفَا یاد رکھیے : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اُفْضُلُ الْعِبَادَاتِ أَحْمَرُهَا ہے ।^(۱) ہجرتے ساید دُنہا یبراہیم بن ادھم کا یہ فرمائے ہے رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کیا یہ فرمائے گا یہاں پلے سے باندھنے والा ہے : جو اُمالم دُنہا میں جیتنا دُشوار ہو گا بروز کیا مات میڈاں میں اتنہا ہی جیانا دُشوار ہو گا ।^(۲)

مُشکلات کے یہ کارانا نہیں چاہیے

میठے میठے اسلامی بادیو ! فرمائے باری تاہلی ہے :

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرٌ ۝
۝ پ، المنشـح: ۳۰

ترجماً کنٹل ہممان : تو بے شک دُشواری کے ساتھ آسانی ہے ।

۱ کشف الحفاء و مزيل الالباس، حرف الهمزة مع الفاء، ۱/۱۳۱، حدیث: ۹۵۹

۲ تذكرة الاولی، باب یازدہم ذکر ابراہیم بن ادھم، ص: ۹۵

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में सिरातुल जिनान, जिल्द 10 सफ़हा 747 पर है कि किसी मुश्किल, मुसीबत या दुश्वारी के आ जाने की वज्ह से घबराना नहीं चाहिये बल्कि **अल्लाह** तआला से मुश्किल और मुसीबत दूर हो जाने और दुश्वारी आसान हो जाने की उम्मीद रखते हुए दुआ करनी चाहिये, **अल्लाह** तआला ने चाहा तो बहुत जल्द आसानी मिल जाएगी। **अल्लाह** तआला इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُكْلِفُ اللَّهُ تَعَالَى إِلَّا مَا أَتَاهَا
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ سَيِّسًا^{۱۴}
(الطلاق: ۷)، ۲۸۷

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है कि **अल्लाह** दुश्वारी के बा'द आसानी फ़रमा देगा।

मदनी इन्डिया पर अ़मल करने का पर्ज़ा जद्वल

सुष्ठु दो घण्टे का जद्वल

पर्ज़ा का वक्त शुरूअ़ होने से 20 मिनट पहले बेदार हो जाइये। अगर वक्ते पर्ज़ा 5 बजे शुरूअ़ हो रहा है तो 4:40 पर बेदार हो जाइये।

(कोलम्ज़ में लिखी गई गिनती से मुराद मदनी इन्डिया नम्बर है)

4:40 ता 5:00	(1) अच्छी अच्छी नियतें (20) तहिय्यतुल वुजू (19) तहज्जुद (39) बा वुजू	5:30 ता 5:35	(35) सदाए मदीना (36) निगाहे झुका कर चलना
5:00 ता 5:05	(5) औरादो वज़ाइफ़	5:35 ता 5:40	(18) सुन्नते क़ब्लिया
5:05 ता 5:17	(14) 12 मिनट मुत्तालआ	5:40 ता 6:00	(2) बा जमाअत नमाज़ (3) नमाज़ के बा'द के वज़ाइफ़ (44) दुआ (6) सलाम
5:17 ता 5:30	(4) अज़ान का जवाब (27) किला रुख़		(9) सलाम का जवाब

6:00 ता 6:20	(21) ३ आयात (14) ४ सफ़हात (बा'दे फ़ज़्र मदनी हल्का)	6:20 ता 6:30	(5) ३१३ बार दुरुदे पाक
		6:30 ता 6:40	(19) इशाराक व चाशत

यूं 17 मदनी इन्ड्रामात पर अःमल हो जाएगा ।

मग़ाविक की नमाज़ के बा'द का जद्वल

अगर मग़ाविक की नमाज़ 6 बजे है :

6:00 ता 6:15	(2) नमाजे बा जमाअ़त (18) नवाफ़िले बा'दिया	6:30 ता 6:35	(15) फ़िक्रे मदीना
6:15 ता 6:30	(19) अब्बाबीन (3) सूरतुल मुल्क (12) मदनी दर्स	6:35 ता 7:48	(47) मदनी चैनल (11) मिट्टी के बरतन, पेट का कुफ़ले मदीना

यूं आप का 21 मदनी इन्ड्रामात पर अःमल हो जाएगा ।

इशा की नमाज़ से 2 घन्टे का जद्वल

7:48 ता 8:00	(4) अज़ान का जवाब (18) सुनते क़ल्लिया	9:06 ता 9:20	(22) दो पर इनफ़िरादी कोशिश (40) निगाह गाड़े बिगैर गुफ़तगू (10) इस्तिलाहात का इस्ति'माल
8:00 ता 8:25	(2) नमाजे बा जमाअ़त (18) नवाफ़िले बा'दिया	9:20 ता 9:40	(12) घर में मदनी दर्स (16) सलातुत्तौबा (23) दो घन्टे मदनी काम
8:25 ता 9:06	(13) मद्रसतुल मदीना बालिगुन	9:40 ता 9:50	(17) सुनत बोक्स, चटाई आराम

यूं 29 मदनी इन्ड्रामात पर अःमल हो जाएगा ।

आदात में शामिल मदनी इन्डिया

वोह मदनी इन्डिया जिन को हम अपनी आदात में शामिल कर सकते हैं : (7) घर में आप, जी कह कर गुफ्तगू (8) ﴿شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ﴾ का इस्ति'माल (24) मर्कज़ी मजलिसे शूरा, जो आप के निगरान हैं उन की इताअत (25) दूसरों से चीज़ें मांगने से बचना (26) तन्जीमी तौर पर मस्अला हल करना (28) गुस्से का इलाज (29) फुज्जूल सुवालात से बचना (30) ना महरम से शरई पर्दा (31) फ़िल्मों ड्रामों से बचना (32) घर में मदनी माहोल की तरकीब (33) तोहमत, गाली गलोच से बचना (34) बात काटने से बचना (37) घरों में झांकने से बचना (38) झूट, ग़ीबत से बचना (41) कर्ज़ की वक्त पर अदाएगी (42) उऱ्यूब की पर्दापोशी (43) यक्सां तअल्लुकात (45) रियाकारी से बचना (48) मज़ाक़ मस्ख़री से बचना (49) फुज्जूल गुफ्तगू पर नादिम हो कर दुरुदे पाक पढ़ना (50) मदनी हुल्या अपनाना ।

यूं 50 मदनी इन्डिया पर अमल हो सकता है ।

हफ्तावार मदनी इन्डिया

बुध को नमाजे अःस्र से ले कर पीर मग़रिब तक जदवल की तरकीब कुछ यूं बनाइये :

बुध	(54) मदनी दौरा (बा'दे अःस्र ता मग़रिब)
जुमे'रात	(51) हफ्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ, रात ए'तिकाफ़ (52) चार पर इनफ़िरादी कोशिश
जुमुआ	(53) इयात (किसी भी वक्त : 12 मिनट)
हफ्ता	(47) मदनी मुज़ाकरा (बा'दे इशा)
इतवार	(55) जो पहले आते थे अब नहीं आते, उन से मुलाकात (बा'दे इशा : 26 मिनट)
पीर	(57) मक्तुब तहीर व रवाना (अःस्र ता मग़रिब) (58) पीर शरीफ़ का रोज़ा

माहाना मदनी इन्डिया

मदनी माह की पहली तारीख और पहली पीर शरीफ का जदवल ये होना चाहिये :

पहली तारीख	(59) मदनी इन्डिया का रिसाला जम्मू (60) 3 दिन मदनी क़ाफ़िले की नियत व अम्ल
पहली पीर	(60) यौमे कुफ़ले मदीना (61) राबिता इस्लामी भाई, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्डिया दुआएं (64) दोहराई आखिरी 10 सूरतें

क्षालाना मदनी इन्डिया

मुहर्रमुल हराम ता जुल हिज्जतुल हराम का जदवल ये होना चाहिये :

मुहर्रमुल हराम ता जुल हिज्जतिल हराम	(70) अगर रोज़ाना 19 आयात की तिलावत की जाए तो यूं 12 माह में नाज़िरा कुरआने करीम मुकम्मल हो सकता है।
मुहर्रमुल हराम ता रबीउल अब्वल (3 माह)	(72) नमाज़ के अहकाम व नमाज़ व वुजू व गुस्ल दुरुस्त व दोहराई
रबीउल आख़र (1 माह)	(69) बहारे शरीअत का मुतालआ
जुमादल ऊला (1 माह)	(67) एक माह का मदनी क़ाफ़िला
जुमादल ऊख़रा (1 माह)	(68) मिन्हाजुल आबिदीन का मुतालआ
रजबुल मुरज्जब ता शा'बानुल मुअज्ज़म (2 माह)	(71) कुफ़िया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, चन्दे के बारे में सुवाल जवाब का मुतालआ
रमज़ानुल मुबारक ता जुल हिज्जतिल हराम (4 माह)	(65) (66) अमीरे अहले सुन्नत <small>بِلِلَّهِ رَحْمَةً وَبِرَبِّ الْعَالَمِينَ</small> के तमाम रसाइल व पेम्प्लेट का मुतालआ

इजतिमाई फ़िक्रे मदीना कर तरीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इजतिमाई फ़िक्रे मदीना करवाने वाले इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह सब से पहले यूं कहे :

**आइये ! मदनी इन्डिया का रिसाला पुक़ करवे से पहले
“अच्छी अच्छी तिय्यतें” कर लेते हैं**

- ﴿1﴾ रिजाए इलाही के लिये खुद भी मदनी इन्डिया के रिसाले से आज की फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुहासबा) करूंगा और दूसरों को भी तरगीब दूंगा ।
- ﴿2﴾ जिन मदनी इन्डिया पर अ़मल हुवा उन पर **अल्लाह** पाक की हम्मद (या'नी शुक्र) बजा लाऊंगा ।
- ﴿3﴾ जिन पर अ़मल न हो सका उन पर अफ़सोस और आयिन्दा अ़मल करने की कोशिश करूंगा ।
- ﴿4﴾ गुनाहों से बचाने वाले किसी मदनी इन्डिया पर खुदा न ख़्वास्ता अ़मल न हुवा तो तौबा व इस्तिग़फ़ार के साथ साथ आयिन्दा गुनाह न करने का अहद करूंगा ।
- ﴿5﴾ बिला ज़रूरत अपनी नेकियों (मसलन फुलां फुलां या इतने मदनी इन्डिया पर अ़मल है) का इज़हार नहीं करूंगा ।
- ﴿6﴾ जिन मदनी इन्डिया पर बा'द में अ़मल हो सकता है (मसलन आज 313 बार दुर्घट शरीफ़ नहीं पढ़े) तो बा'द में या कल अ़मल कर लूंगा ।
- ﴿7﴾ मदनी इन्डिया का रिसाला पुर करने के अस्ल मक्सद (मसलन खौफ़े खुदा, तक़ा, अख़लाकियात की दुरुस्ती, मदनी कामों में तरक़ी वगैरा) को हासिल करने की कोशिश करूंगा ।
- ﴿8﴾ कल भी मदनी इन्डिया का रिसाला पुर (या'नी फ़िक्रे मदीना) करूंगा ।
- ﴿9﴾ रस्मी ख़ाना पुरी नहीं बल्कि गैरो फ़िक्र के साथ मदनी इन्डिया का रिसाला पुर करूंगा ।

फिर यूं कहिये : आज जिन जिन मदनी इन्डिया पर अमल की सआदत पाई, नीचे दिये गए खानों में सहीह (या'नी उलटा राइट) का निशान और अमल न होने की सूरत में (o) का निशान लगाइये ।

तवज़ोह अपने ही मदनी इन्डिया के रिसाले पर निगाह रखते हुए फ़िक्रे मदीना कीजिये :

- (1) अच्छी अच्छी नियतें कीं ? (2) पांचों नमाजें तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा कीं ? (3) हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी, तस्बीहे फ़तिमा, सूरए इख्लास पढ़ी ? (4) अज़ानो इक़ामत का जवाब दिया ? (5) 313 बार दुरूदे पाक पढ़े ? (6) मुसलमानों को सलाम किया ? (7) आप और जी से गुफ्तगू की ? (8) जाइज़ बात के इरादे पर ﴿كَلِمَاتُ اللَّهِ الْمُبَرَّكَاتُ﴾ कहा ? (9) सलाम और छींकने वाले की हम्द पर जवाब दिया ? (10) दा'वते इस्लामी की इस्तिलाहात इस्ति'माल कीं ? (11) भूक से कम खाते हुए पेट का कुफ्ले मदीना लगाया ? (12) दो मदनी दर्स दिये या सुने ? (13) मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ा या पढ़ाया ? (14) 12 मिनट इस्लाही किताब और फैज़ाने सुन्नत से तरतीब वार 4 सफ़हात पढ़े या सुने ? (15) फ़िक्रे मदीना की ? (16) सलातुत्तौबा अदा की ? (17) चटाई पर सोए, सिरहाने सुन्नत बोक्स रखा ? (18) सुन्नते क़िल्लिया और फ़र्ज़ों के बा'द वाले नवाफ़िल अदा किये ? (19) तहज्जुद, इशराक़ व चाशत और अब्बाबीन अदा की ? (20) तहिय्यतुल वुजू और तहिय्यतुल मस्जिद अदा की ? (21) कन्जुल ईमान से तीन आयात मअ़ तर्जमा व तफ़सीर तिलावत की ? (22) दो पर इनफ़िरादी कोशिश की ? (23) दो घने मदनी कामों पर सर्फ़ किये ? (24) अपने निगरान की इताअत की ? (25) मांग कर चीज़ें इस्ति'माल तो नहीं कीं ? (26) किसी से बुराई सादिर होने की सूरत में इस्लाह की ? (27) क़िब्ले की सम्त रुख़ किया ? (28) गुस्से का इलाज किया ? (29) फुजूल सुवालात तो नहीं किये ? (30) ना महरम रिशेदारों / ना महरम

પડોસનોં સે પર્દા કિયા ? (31) ફિલ્મોં, ડ્રામોં, ગાને બાજોં સે બચે ? (32) ઘર મેં મદની માહોલ બનાને કી કોશિશ કી ? (33) તોહમત, ગાલી ગલોચ સે બચે ? (34) દૂસરે કી બાત તો નહીં કાટી ? (35) સદાએ મદીના લગાઈ ? (36) આંખોં કા કુપ્ફલે મદીના લગાતે હુએ નિગાહેં નીચી રહ્ખોં ? (37) કિસી ઔર કે ઘરોં કે અન્દર ઝાંકને સે બચને કી કોશિશ કી ? (38) ઝૂટ, ગૃબત, ચુગલી, હસદ, તકબુર, વા'દા ખિલાફી સે બચે ? (39) દિન કા અક્સર હિસ્સા બા વુજૂ રહે ? (40) મુખાત્બ કે ચેહરે પર નિગાહેં તો નહીં ગાડ્યો ? (41) વક્ત પર કર્જ અદા કિયા ? (42) મુસલમાનોં કે ઉયૂબ કી પર્દાપોશી કી ? (43) યક્સાં તઅલ્લુકાત રહ્ખે ? (44) નમાજ ઔર દુઆ મેં ખુશૂઅ વ ખુજૂઅ પૈદા કરને કી કોશિશ કી ? (45) આજિજીને એસે અલ્ફાજ તો નહીં બોલે જિન કી તાઈદ દિલ ન કરે ? (46) જ્બાન કા કુપ્ફલે મદીના લગાતે હુએ ઇશારે ઔર ચાર બાર લિખ કર ગુફ્તગૂ કી ? (47) એક બયાન યા મદની મુજાકરા ઓડિયો, વીડિયો યા મદની ચૈનલ 1 ઘન્ટા 12 મિનિટ દેખા ? (48) મજાક મસ્ખરી, તન્જ, દિલ આજારી, કંહકંહા લગાને સે બચે ? (49) જરૂરી ગુફ્તગૂ કમ સે કમ અલ્ફાજ મેં કી ? (50) મા'યૂબ લિબાસ તો નહીં પહના ?

કુપ્ફલે મદીના કારકર્દઘી

(1) લિખ કર ગુફ્તગૂ 12 મરતબા (2) ઇશારે સે ગુફ્તગૂ 12 મરતબા (3) નિગાહેં ગાડે બિગેર ગુફ્તગૂ 12 મરતબા (4) કુપ્ફલે મદીના એનક કા ઇસ્તિ'માલ 12 મિનિટ

દુનાએ અમીબે અહ્લે સુન્બત

યા અલ્લાન ! જો કોઈ સિદ્કે દિલ (સંચે દિલ) સે મદની ઇન્ઝામાત પર અમલ કરે, રોજાના ફિક્રે મદીના કે જરીએ રિસાલા પુર કરે ઔર હર મદની

ماہ کی پہلی تاریخ کو اپنے جِمِیڈار کو جامِ کرکوا دیا کرے، اس کو
ایس سے پہلے مौت ن دےنا جب تک یہ کلمات ن پڑ لے ।

اَمِينٌ بِجَاهِ اللّٰهِ الْاَمِينِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

تو کلی اپنا بنا لے اس کو رਬِ لامِ یَزِيل "مادنیٰ ڈنڈاً مات" پر کرتا ہے جو کوئی اُملال⁽¹⁾

صَلُّوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

مادنیٰ ڈنڈاً مات کے مُوت‌اللیلکوں فَرَامیں نے اُمیِّرِ اُہلِ سُنْنَت

میठے میठے اسلامیٰ بھائیو ! یکینن وہ لوگ خوش نسیب ہیں، جو
مرنے سے کُبّل مौت کی تیاری کر لےتے ہیں کیونکی جِنْدگی بارف کی ترہ
پیغالتی جا رہی ہے اور ان کریب ہمے مرننا، اندری کبر میں ہتھنا اور
اپنی کرنی کا فل بھگتانا پडے گا ।

مौت سے گرافیل نہ ہو اے بے خوابر ! تُدْعَىٰ کو جانا ہے یہاں سب چوڑ کر

صَلُّوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

مادنیٰ ڈنڈاً مات چونکی آخیزِ رات کی تیاری کا بہترین جریا ہیں،
ایس لیے شے خے تریکت، اُمیِّرِ اُہلِ سُنْنَت دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ نَعَالِيهِ گاہے ب گاہے ان پر
اُملال کی ترگیب دیلاتے رہتے ہیں، چوناں، آپ کے چند فَرَامیں پے شے
خیدمت ہیں :

﴿1﴾ مادنیٰ ڈنڈاً مات نے کا نuss�ا ہے، انہے ساری جِنْدگی کے لیے
اپنا ہے ।⁽²⁾

[1].... وَسَاعِلَةٍ بَرِيشَاش (سُورَمِم)، ص. 635

[2].... مادنیٰ مُسْأَکَرَ، 11 رَمَضَانُ لِمُبَارَك 1436ھ / 28 جُون 2015ء اسی
مُولَّبَرْسَن

﴿2﴾ خامोش رہنے مें دुन्या و آخیرت کے فُواِد हैं । فوجوں بातों سे دل سख्त हो جاتا है, دل का سख्त होना बहुत بुरी بات है । ऐसा شख्स **अल्लाह** پاک की رحمत سے مहरूम हो جاتा है ।⁽¹⁾ ﴿3﴾ हर रोज़ फिक्रे मदीनا कर के مदनी انعامات کے رسالے के खाने पुर करें और ज़िम्मेदार को हर مदनी माह की पहली तारीख़ को جम्म करवा दें । 10 तारीख़ का इन्तज़ार न करें ।⁽²⁾ ﴿4﴾ हरमैने तथ्यबैन में भी अपने अवकात हत्तल इमकान मदनी انعامات के मुताबिक़ गुज़ारिये ।⁽³⁾ ﴿5﴾ मदनी انعامات के बिग्रेर आदमी अधूरा है ।⁽⁴⁾ ﴿6﴾ मदनी انعامات के मुताबिक़ जिन्दगी गुज़ारें ।⁽⁵⁾ ﴿7﴾ मदनी انعامات जन्नत में जाने का नुस्खा (Formula) है, इन पर अ़मल करने वाले का किरदार सुथरा हो जाएगा और वोह नमाज़ी व परहेज़गार बन जाएगा ।⁽⁶⁾

سارے اپناناؤ “مادنیٰ انعامات” گر تुम्हें آرजूِِٰ اَरम کی ہے⁽⁷⁾

صَلَوٰةً عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَوٰةً عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ मदनी इन्नामात रूहानियत पाने का नुस्खा है, इन पर अ़मल करने से खौफ़े खुदा और इश्क़े मुस्तफ़ा हासिल होता है ।⁽⁸⁾ ﴿9﴾ मदनी इन्नामात का

- [1]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 7 سफ़رل مُعْجَزَات 1436 هِिरَيِي بِ مُعْجَزَات 29 نَوْمَبَر 2014 إِسْكَانِي
- [2]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 20 شَبَّابُلُل مُعْجَزَات 1435 هِि�رَيِي بِ مُعْجَزَات 16 آغُسْطُس 2014 إِسْكَانِي
- [3]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 2 جُولِيٰ هِिजَّاتِلِلِلِهِ رَمَادَن 1435 هِि�رَيِي بِ مُعْجَزَات 27 سِيَّنَمْبَر 2014 إِسْكَانِي
- [4]....خُبُوسُسِي مادنیٰ مُعْجَزَات، 7 مُهَرْمُلِلِلِهِ رَمَادَن 1436 هِिरَيِي بِ مُعْجَزَات 31 اَكْتُوبَر 2014 إِسْكَانِي
- [5]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 6 رَبِّيُّوُل اَبْوَل 1436 هِिरَيِي بِ مُعْجَزَات 28 دِيسَمْبَر 2014 إِسْكَانِي
- [6]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 10 رَبِّيُّوُل اَبْوَل 1436 هِिरَيِي بِ مُعْجَزَات يَكُوم جَنَوْرَي 2015 إِسْكَانِي
- [7]....वसाइले बस्तिशा (मुरम्म), स. 141
- [8]....مادنیٰ مُعْجَزَات، 12 رَبِّيُّوُل اَبْوَل 1436 هِिरَيِي بِ مُعْجَزَات 3 جَنَوْرَي 2015 إِسْكَانِي

હકીકી આમિલ હજારોં લાખોં મેં પહુંચાના જાતા હૈ, ક્યાંકિ વોહ નિખરા નિખરા નજર આતા હૈ।⁽¹⁾ ॥10॥ જો રોજાના ફિક્રે મદીના કર કે ચાંદ રાત યા યકુમ તારીખું કો મદની ઇન્ઝામાત કા રિસાલા જમ્ભું કરવા દે, તો મેરા જી ચાહતા હૈ કિ મૈં ઉસે ચલ મદીના કર દું।⁽²⁾ ॥11॥ મુજ્જે મદની ઇન્ઝામાત સે બેહેદ પ્યાર હૈ।⁽³⁾ ॥12॥ જબ મુજ્જે મા'લૂમ હોતા હૈ કિ ફુલાં ઇસ્લામી ભાઈ યા ઇસ્લામી બહન કા મદની ઇન્ઝામાત પર અમલ હૈ તો દિલ બાગું બાગું બલિક બાગું મદીના હો જાતા હૈ। યા સુનતા હૂં કિ ફુલાં ને જબાન ઔર આંખોં કા યા ઉન મેં સે કિસી એક કા કુપ્ફલે મદીના લગાયા હૈ તો અજીબ કૈફો સુરૂર હાસિલ હોતા હૈ।⁽⁴⁾ ॥13॥ જો કોઈ મદની ઇન્ઝામાત કે મુતાબિક ઇખ્લાસ કે સાથ **અલ્લાહ** પાક કી રિજા કે લિયે અમલ કરેગા તો વોહ **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَا شَاءَ** **અલ્લાહ** પાક કા પ્યારા બન જાએગા।⁽⁵⁾ ॥14॥ અગર કોઈ સહીહું મા'નો મેં મદની ઇન્ઝામાત પર અમલ કરે તો વોહ નેક વ પરહેજાર બન જાએગા।⁽⁶⁾

મેં બન જાऊં સરાપા મદની ઇન્ઝામાત કી તસ્વીર બનૂંગા નેક યા **અલ્લાહ** અગર રહેત તેરી હોણી⁽⁷⁾

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

- 1....મદની મુજાકરા, 12 રબીઉલ અબ્બલ 1436 હિજરી બ મુતાબિક 3 જનવરી 2015 ઈસવી
- 2....મદની મુજાકરા, 2 રબીઉલ આખિર 1436 હિજરી બ મુતાબિક 22 જનવરી 2015 ઈસવી
- 3....મદની મુજાકરા, 2 રબીઉલ આખિર 1436 હિજરી બ મુતાબિક 22 જનવરી 2015 ઈસવી
- 4....જનત કે તુલબગારોં કે લિયે મદની ગુલદસ્તા, સ. 33
- 5....જનત કે તુલબગારોં કે લિયે મદની ગુલદસ્તા, સ. 46
- 6....ખુસૂસી મદની મુજાકરા, 9 રબીઉલ આખિર 1436 હિજરી બ મુતાબિક 29 જનવરી 2015 ઈસવી
- 7....વસાઇલે બરિશાશ (મુરમ્મમ), સ. 393

- ﴿15﴾ اسکے لئے محدثیہ کیسے گوئا رہنی ہے ؟ اس کی ماں لومات کے لیے محدثیہ اینٹامات کا رسالہ پڑھیے اور اس کے معتابیک جنڈگی گوئا رہیے ।⁽¹⁾
- ﴿16﴾ اگر آپ نکل بننا چاہتے ہیں تو محدثیہ اینٹامات پر اعمال کیجیے ।⁽²⁾
- ﴿17﴾ جو ایکلیس کے ساتھ محدثیہ اینٹامات پر اعمال کرے گا، وہ با اعمال بن جائے گا ।⁽³⁾ ﴿18﴾ جو محدثیہ اینٹامات کے معتابیک جنڈگی گوئا رہے ہیں، وہ بہترین مسلمان ہے ।⁽⁴⁾

آمیلیہ محدثیہ اینٹامات کو امیل کے اہل سمعت کی دعاء

محدثیہ اینٹامات کے آمیل کو شےخہ تیریکت، امریکے اہل سمعت دعاء دے رہے ہیں :

- ✿ یا رببِ مسٹفہ ! جو تیری رسالت کے لیے اس محدثیہ اینٹامات کے معتابیک اعمال کرے، اس سے پہلے مौت ن دے جب تک وہ مداری ن چوڑ لے ।⁽⁵⁾
- ✿ یا اللہ علی ! جو کوئی سچے دل سے محدثیہ اینٹامات پر اعمال کرے، روزانہ فیکر مداری کے جریए رسالہ پور کرے اور ہر محدثیہ ماه کی پہلی تاریخ کو اپنے جمیڈار کو جمیڈ کرवا دیا کرے، اس کو اس سے پہلے مौت ن دینا، جب تک یہ کلیما ن پढ़ لے ।

تو والی اپنا بنا لے اس کو رببِ لام یا جل "محدثیہ اینٹامات" پر کرتا ہے جو کوئی اعمال⁽⁶⁾

صلواتُ اللہِ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

1....محدثیہ مسٹا کرنا، 9 جوامدال ڈل 1437 ہیجری، محدثیہ فلٹ نمبر 3

2....محدثیہ مسٹا کرنا، 4 رمذانیل مubarak 1437 ہیجری

3....محدثیہ مسٹا کرنا، 26 رمذانیل مubarak 1437 ہیجری، یکوم جولائی 2016 ایس وی

4....محدثیہ مسٹا کرنا، 17 رمذانیل مubarak 1435 ہیجری

5....جنن کے تلبگاروں کے لیے محدثیہ گول دستا، س. 46

6....واسیلے بخشش (میرمیم)، س. 635

મદની ઇન્દ્રામાત કે બારે મેં મર્કજી મજલિસે શૂરા કે મદની ફૂલ

﴿1﴾ મદની ઇન્દ્રામાત કે મુતાબિક જિન્દગી ગુજારને વાલા ફુજૂલિયાત સે મહફૂજ રહેગા⁽¹⁾ ﴿2﴾ હમારે ગુનાહોં કા ઇલાજ ફિક્રે મરીના હૈ |⁽²⁾ ﴿3﴾ મદની કાફિલે ઔર મદની ઇન્દ્રામાત ઇબાદત હી ઇબાદત હૈં |⁽³⁾ ﴿4﴾ મદની ઇન્દ્રામાત ચલ મરીના કે કાફિલે કી સૌંગાત હૈં |⁽⁴⁾ ﴿5﴾ મદની ઇન્દ્રામાત પર અમલ ઔર રોજાના ફિક્રે મરીના કી બરકત સે આદમી ફિસ્ક સે બચતા હૈ |⁽⁵⁾ ﴿6﴾ મદની ઇન્દ્રામાત મેં બહુત જામેઝ્યત હૈ |⁽⁶⁾ ﴿7﴾ મદની ઇન્દ્રામાત મેં રિજાએ ઇલાહી કે અસ્બાબ હૈં અસ્લ મક્સૂદ રિજાએ ઇલાહી હૈ |⁽⁷⁾ ﴿8﴾ મદની ઇન્દ્રામાત કા હર સુવાલ ગોયા કિ અમીરે અહલે સુન્તત دَامَتْ بِرَبِّكُمْ الْعَالِيَهُ કી ઇનફિરાદી કોશિશ હૈ |⁽⁸⁾ ﴿9﴾ જો યેહ ચાહતા હૈ કિ ઉસ કે શો'બે યા અલાકે / શહર / ડિવીજન / સૂબે / કાબીના મેં મદની ઇન્દ્રામાત આમ હો જાએ / ખૂબ તરક્કી કરેં તો વોહ ખુદ રોજાના ફિક્રે મરીના કરે ઔર મદની ઇન્દ્રામાત કા આમિલ બન જાએ |⁽⁹⁾

- [1]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, યકુમ તા 7 સફરુલ મુજફ્ફર 1430 હિજરી બ મુતાબિક 29 જનવરી તા 4 ફરવરી 2009 ઈસવી
- [2]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, યકુમ તા 7 સફરુલ મુજફ્ફર 1430 હિજરી બ મુતાબિક 29 જનવરી તા 4 ફરવરી 2009 ઈસવી
- [3]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, યકુમ તા 7 સફરુલ મુજફ્ફર 1430 હિજરી બ મુતાબિક 29 જનવરી તા 4 ફરવરી 2009 ઈસવી
- [4]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી
- [5]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી
- [6]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી
- [7]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી
- [8]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી
- [9]....મદની મશવરા મર્કજી મજલિસે શૂરા, 4 સફરુલ મુજફ્ફર 1432 હિજરી બ મુતાબિક 8 જનવરી 2011 ઈસવી

﴿10﴾ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करना, मदनी इन्हामात पर अ़मल करने की चाबी (Key) है।⁽¹⁾ ﴿11﴾ मदनी इन्हामात तसव्वुफ़ व रुहानिय्यत का मज़मूआ हैं।⁽²⁾ ﴿12﴾ अमीरे मदनी क़ाफ़िला गाऊं गाऊं, शहर शहर, मदनी इन्हामात नाफ़िज़ कर सकता है।⁽³⁾ ﴿13﴾ ज़िम्मेदारने दा'वते इस्लामी मदनी इन्हामात के नफ़ाज़ के लिये कोशिश करते रहें, बार बार इनफ़िरादी और इजतिमाई तौर पर फ़िक्रे मदीना करवाएं और इस की तरगीब दिलाएं।⁽⁴⁾ ﴿14﴾ मदनी इन्हामात के भरपूर नफ़ाज़ का बेहतरीन ज़रीआ अपनी ज़ात पर इस का नाफ़िज़ करना है, आप इसे एक बार नाफ़िज़ कीजिये फिर देखिये कैसा मदनी रंग नज़र आता है।⁽⁵⁾

﴿15﴾ मदनी इन्हामात के मदनी कामों को मज़बूत करें, हर सत्र पर भरपूर तवज्जोह दें।⁽⁶⁾ ﴿16﴾ मदनी इन्हामात अपनी ज़ात पर भी नाफ़िज़ करें और हर शो'बे में भी मज़बूत करें।⁽⁷⁾ ﴿17﴾ दा'वते इस्लामी मदनी इन्हामात की तहरीक है।⁽⁸⁾ ﴿18﴾ मदनी इन्हामात का आमिल फ़ित्री तौर पर बा हया, निगाहें नीचे रखने वाला, लिख कर गुफ्तगू करने वाला होता है। येह वोह बातें हैं, जिस से मा'लूम होता है कि इस ने मदनी इन्हामात को अपनी रुह में समोलिया है।⁽⁹⁾ ﴿19﴾ हमारी निजी ज़िन्दगी और तन्जीमी सर गर्मियां मदनी

- [1]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 4 सफ़रूल मुजफ्फ़र 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 8 जनवरी 2011 ईस्वी
- [2]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 26 ता 28 रबीउल आदिवर 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 1 ता 3 अप्रैल 2011 ईस्वी
- [3]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 26 ता 28 रबीउल आदिवर 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 1 ता 3 अप्रैल 2011 ईस्वी
- [4]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 26 ता 28 रबीउल आदिवर 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 1 ता 3 अप्रैल 2011 ईस्वी
- [5]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 26 ता 28 रबीउल आदिवर 1432 हिजरी ब मुताबिक़ 1 ता 3 अप्रैल 2011 ईस्वी
- [6]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 17 शब्वालुल मुर्कर्म 1434 हिजरी ब मुताबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2013 ईस्वी
- [7]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 17 शब्वालुल मुर्कर्म 1434 हिजरी ब मुताबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2013 ईस्वी
- [8]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 17 शब्वालुल मुर्कर्म 1434 हिजरी ब मुताबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2013 ईस्वी
- [9]...मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 17 शब्वालुल मुर्कर्म 1434 हिजरी ब मुताबिक़ 22 ता 26 अगस्त 2013 ईस्वी

इन्हामात में ढली हुई होनी चाहिये ।⁽¹⁾ ॥२०॥ मदनी इन्हामात के अमिलीन की सोहबत इख्तियार कीजिये ।⁽²⁾

काश ! छोड़न “मदनी इन्हामात” तू इनायत मुदावमत फ़रमा⁽³⁾

صَلُّو عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

مَدْنَى إِنْجَامَاتٍ كَيْ مَدْنَى بَحَارَے

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيَّهُ के फ़रामीन और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों के मदनी फूलों में मदनी इन्हामात के कैसे कैसे फ़वाइद बयान हुए, लिहाज़ा हमें चाहिये कि कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इन मदनी इन्हामात पर अ़मल करते हुए फ़िक्रे मदीना को अपनी ज़िन्दगी का एक लाज़िम हिस्सा बना लें कि बिलाशबा आशिकाने रसूल की मदनी तह्रीक दा’वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की एक कसीर ता’दाद ऐसी है, जिन की ज़िन्दगी में इन मदनी इन्हामात ने मदनी इन्क़िलाब पैदा कर दिया है । बहुत से तो ऐसे हैं कि मदनी इन्हामात का रिसाला पढ़ कर ही हैरान रह जाते हैं कि इस मुख्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का कितना ज़बरदस्त व मुनज्ज़म फ़ॉर्मूला दे दिया गया है ! चुनान्वे, मदनी इन्हामात के रिसाले की बरकत से उन को नमाज़ का ज़ब्बा ही नहीं मिलता, बल्कि वोह दूसरों को भी मस्जिद में ले

[1]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 16 ता 20 रजबुल मुरज्जब 1435 हिजरी ब मुताबिक़ मई 2014 ईसवी

[2]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, यकुम ता 5 जुल का'दतिल हराम 1436 हिजरी ब मुताबिक़ अगस्त 2015 ईसवी

[3]....वसाइले बरिष्ठाश (मुरम्मम), स. 75

जाने की कोशिश करने लगते हैं, एक वक्त भी नमाज़ न पढ़ने वाले या कभी कभार पढ़ने वाले या पाबन्दी से न पढ़ने वाले पांच वक्त नमाजें बा जमाअत की अदाएंगी के लिये मस्जिद की पहली सफ़ में ही नज़र नहीं आते बल्कि तहज्जुद और इशराक़ व चाश्त अदा करने वाले भी बन जाते हैं और बा'ज़ खुश नसीबों की क़िस्मत तो यूं भी जाग उठती है कि बसा अवक़ात उन्हें ماغ़फ़िरत की नवीद (खुश ख़बरी) **अल्लाह** के प्यारे हड्डीब की ज़बानी सुनाई जाती है। जैसा कि ज़म ज़म नगर (हैदराबाद बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह हलफ़िया बयान है कि माहे रजबुल मुरज्जब 1426 हिजरी की एक शब मुझे ख़बाब में मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआदत मिली। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रहमत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाएः जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से मदनी इन्डिया से मुतअल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, **अल्लाह** पाक उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।

मदनी इन्डिया की भी मरहबा क्या बात है

कुर्बे हङ्क के तालिबों के वासिते सौंगात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**

मदनी इन्डिया की बरकतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी इन्डिया की वज्ह से कसीर इस्लामी भाइयों को जो बरकतें हासिल हुईं और जो हो रही हैं वोह शुमार से बाहर हैं, येही वज्ह है कि इस मदनी माहोल में कई इस्लामी भाई ऐसे भी हैं जिन्हें फ़िक्रे मदीना करते हुए सालों हो गए हैं कि शायद ही कभी किसी माह

उन्होंने मदनी इन्डिया का रिसाला जम्मू न करवाया हो। मिसाल के तौर पर सूबा पंजाब के शहर सरदाराबाद (फैसलाबाद) के अतराफ़ में रहने वाले एक इस्लामी भाई का तहरीरी बयान है कि गुज़श्ता 12 साल से एक मरतबा भी मदनी इन्डिया का रिसाला जम्मू करवाने में नागा नहीं किया, बल्कि गुज़श्ता डेढ़ साल में कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रा कि उन्होंने ने फ़िक्रे मदीना न की हो। चुनान्वे, मदनी इन्डिया पर अ़मल की बरकत से न सिर्फ़ उन्हें सूरए मुल्क ज़्याबानी याद हो चुकी है, बल्कि **अल्लाह** पाक के फ़ृज़लो करम से उन्हें कई बार ख़्वाब में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بِرَبِّكُلُّهُمْ الْعَالِيِّ के दीदार की सआदत भी मिल चुकी है और **الْحَمْدُ لِلَّهِ**! ता दमे तहरीर वोह इस वक्त डिवीज़न जिम्मेदार की हैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हैं। इसी तरह कोट बाग़ अ़ली अल मशहूर पिन्डभट्टा मुस्तफ़ाबाद (राएवन्ड) के एक इस्लामी भाई का भी तहरीरी बयान है कि **अल्लाह** पाक के फ़ृज़लो करम से वोह 2003 ईसवी में दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हुए और उस वक्त से ले कर ता दमे तहरीर उन की मदनी इन्डिया पर अ़मल की तरकीब रही है, बल्कि 2004 ईसवी से मुसलसल 8 या 10 दिन की फ़िक्रे मदीना के इलावा हर रोज़ फ़िक्रे मदीना की सआदत भी मिलती रही है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मरहबा सद मरहबा ! वोह तमाम इस्लामी भाई किस क़दर खुश क़िस्मत हैं जो रोज़ाना फ़िक्रे मदीना की सआदत पाते हैं और उन इस्लामी भाइयों की क़िस्मत पर बिलाशुबा रशक करने को जी चाहता है, जो इस फ़ानी दुन्या से कूच तक फ़िक्रे मदीना की सआदत पाते रहे और वक्ते रुख़्सत मुर्शिदे करीम उन्हें अल वदाअ़ करने तशरीफ़ लाए। चुनान्वे,

बलूचिस्तान के शहर सूई के मुकीम इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे बड़े भाई (उम्र तक़रीबन 35 साल) 2003 ईसवी से बीमार रहने लगे काफ़ी इलाज करवाया मगर मरज़ बढ़ता ही रहा। अक्तूबर के महीने में डोक्टरों ने ब्लड केन्सर का मरज़ तश्खीस किया। मेरे भाई आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता थे और ज़माने के बली शैख़ तरीक़त, अमीरे अहले سुन्नत دامَّثْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيِّهِ के ज़रीए मुरीद बन कर अन्तारी हो चुके थे, इन्हीं बरकतों के तुफ़ेल सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रहता। सख़्त कमज़ोरी और तकलीफ़ के बा वुजूद जब तक जिन्दा रहे कोई नमाज़ क़ज़ा न होने दी, बल्कि लोग इस बात पर हैरान थे कि येह इस हालत में भी अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले سुन्नत دامَّثْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيِّهِ के अन्ताकर्दा मदनी इन्नामात के मुताबिक़ मा'मूल रखते हैं मसलन इशाराक़ व चाशत, अव्वाबीन और सलातुत्तौबा की पाबन्दी के इलावा रात को एहतिमाम से सूरए मुल्क सुना करते। ऐसा लगता कि वोह 72 मदनी इन्नामात का आमिल बन कर मुर्शिदे करीम का मन्ज़ूरे नज़र बनना चाहते थे أَلْحَدِّلُ لِلَّهِ عَلَيْهِ ! उन की ज़बान पर सारा दिन कलिमए त़य्यिबा, لِلَّهِ الْأَكْبَرُ حَمْدُهُ وَسُلْطَانُهُ, ज़िक्रुल्लाह या दुरूदे पाक الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى إِلَكَ وَأَصْحَابِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ जारी रहता।

जिस रोज़ इन्तिकाल हुवा, सारी रात ज़बान पर ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़ और कलिमए त़य्यिबा का विर्द जारी रहा। कमज़ोरी के बाइस नमाज़े इशा इशारों में अदा की। सुब्ह जब मैं नमाज़े फ़त्र मस्जिद में अदा कर के वापस आया तो देखा कि भाई जो सहारे के बिग्रैर उठ नहीं सकते थे बिग्रैर सहारे उठ कर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और वालिदा उन्हें संभाल रही हैं, मैं ने क़रीब पहुंच कर पूछा : भाई ! क्या बात है ? कहां जाना है ? तो बोले : वोह देखो सामने मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले سुन्नत دامَّثْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيِّهِ तशरीफ़

लाए हैं। येह कहने के बा'द उन का जिस्म ढीला पड़ गया, मैं ने सहारा दे कर उन्हें बिस्तर पर लिटाया और देखा तो उन की रुह क़फ़्से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी।

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फिरत हो। امِين بِحَمْدِ اللّٰهِ الرَّبِّ الْأَكْبَرِ الْأَمِينِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَبِيبِ! صَلَوٰةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

مَدْنَى إِنْجَامَاتٍ سे مُتَذَلِّلَكَ شَارِدٌ وَ تَنْجِيَّمٌ إِلَيْهَا تَوْرِيدٌ

شَارِدٌ إِلَيْهَا تَوْرِيدٌ

सुवाल (1) : निगरान व जिम्मेदारान के तरगीब दिलाने पर मदनी इन्अ़ामात पर अ़मल का ब ज़ाहिर इक़रार तो कर लिया मगर दिल में नियत न थी, तो ऐसा करना कैसा ?

जवाब : येह झूट और वा'दा खिलाफ़ी है।

सुवाल (2) : मदनी इन्अ़ामात का आमिल बनाने के लिये किसी पर इस क़दर इसरार करना कि वोह जान छुड़ाने के लिये झूटा इक़रार (*False confession*) कर ले तो ऐसा करना कैसा ?

जवाब : किसी को मदनी इन्अ़ामात का आमिल बनाना अगर्चे अच्छा काम है, मगर इस हृद तक इसरार करना दुरुस्त नहीं कि कोई जान छुड़ाने के लिये झूटा इक़रार करने पर मजबूर हो जाए।

सुवाल (3) : क्या मुलाज़िम व मज़दूर और तालिबे इलम नफ़्ल रोज़ा रख सकते हैं ?

जवाब : मुलाजिम या मज़दूर अगर नफ़्ल रोज़ा रखें और काम पूरा नहीं कर सकते तो “मुस्ताजिर” (या’नी जिस ने मुलाज़मत या मज़दूरी पर रखा है उस) की इजाज़त ज़रूरी है और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं। (अगर वक़्फ़ के इदारे में मुलाजिम हैं और नफ़्ल रोज़ा रखने की सूरत में काम पूरा नहीं कर सकते तो किसी की इजाज़त कार आमद नहीं, मुलाज़मत करने वाले बारहा समझते हैं कि रोज़े की वज्ह से इन के काम में हरज वाकेअ़ नहीं हो रहा हालांकि बसा अवक़ात बहुत ज़ियादा रुकावट पड़ रही होती है खुसूसन अ़वामी मक़ामात पर काम करने वाले, होटलों पर खाना पकाने वाले, मेज़ों पर पहुंचाने वाले या मज़दूर वगैरहा तो इन का अपने ज़ेहन में एक आध मरतबा समझ लेना काफ़ी नहीं कि काम में हरज नहीं हो रहा बल्कि निहायत ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि कहीं नफ़्ल रोज़े के शौक़ में इजारे के काम में सुस्ती कर के हराम कमाई कमाने के मुर्तकिब न हों, खुसूसन दीनी मदारिस के असातिज़ा को इस मस्अले का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि उन्हें तो कोई नफ़्ल रोज़ों में रुख़्सत की इजाज़त भी नहीं दे सकता) तालिबे इल्मे दीन अगर अपनी ता’लीम में मा’मूली सा भी हरज देखे तो हरगिज़ नफ़्ल रोज़ा न रखे बल्कि वोह हफ्तावार छुट्टी के दिन रोज़ा रख सकता है नीज़ मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरीन थोड़ी सी भी कमज़ोरी महसूस करें तो नफ़्ल रोज़ा न रखें ताकि हुसूले इल्मे दीन और नेकी की दा’वत के अफ़ज़ल तरीन काम में कमज़ोरी रुकावट न बने। जहां भी नफ़्ल रोज़े के सबब किसी अफ़ज़ल काम में हरज वाकेअ़ होता हो वहां रोज़ा न रखे। मां बाप अगर बेटे को नफ़्ल रोज़े से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का

اندھشا ہے تو والیدن کی احتیاط کرے । شوہر کی حجاجت کے بیگنے بیوی نپل روزا نہیں رکھ سکتی ।⁽¹⁾

سُوَّال (4) : کیسی سے مدنیٰ ہجۃ‌الامات پر اممل سے معتزلہ کے پڑھنے پر اس کا جوابن ڈھٹی مубالاگا آرائی (Exaggeration) کرنا کہسا ؟ (یا'نی کہے کہ میرا 63 یا 72 پر اممل ہے جب کہ ہکیکت کوئی اور ہے)

جواب : ڈھٹی مубالاگا آرائی (Exaggeration) ہرام ہے । یاد رکھیے ! شےخے تریکت، امریے اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ مубالاگا آرائی سے خود بھی بहوت جیسا دا بچتے ہیں اور تمام اشیا کا رسول کو بھی ڈھٹی مубالاگا آرائی سے بچنے کا مدنیٰ جہن دتے رہتے ہیں ।⁽²⁾

سُوَّال (5) : مہرج نیگران و جیمیڈار کی ریزا و خوشنودی کے لیے فیکر مدینا یا'نی مدنیٰ ہجۃ‌الامات کا رسالا پور (Fill) کرنا اور وکٹ پر جمی (Submit) کروانا کہسا ؟

جواب : گناہ ہے، مدنیٰ ہجۃ‌الامات پر اممل ریزا ای ایلاہی پانے اور سوال کمانے کے لیے ہونا چاہیے ।

سُوَّال (6) : مدنیٰ ہجۃ‌الامام نمبر 42 کے معتزلہ کیسی مسلمان کے ڈیوب پر معتزلہ ہو جانے پر اس کی پردپوشی کرنے اور اس کا اےب جاہیر ن کرنے کا ہوکم ہے، لیکن اگر وہ اےب یا بورائی کیسی اےسے جیمیڈار یا نیگران میں پائی جائے جو تنجیم کے لیے نوکسماں دے ہو تو اب کیا کرے ؟

جواب : گلٹی کرنے والے کی براہ راست ہسلاہ کیجیے اور مسایل کا تنجیمی ترکیب سے ہل نیکالیے، جب تک شرائیں واجب ن ہو جائے تو اس وکٹ تک کیسی کی گلٹی دوسرے کے آگے بیان کر کے باد گمانیوں، گیبتوں، چوغلیوں اور اک دوسرے کے ڈیوب ٹھالنے کا باجڑا گرم کر کے

[1]....آرہی کے سوالات اور ارہی آکا کے جوابات، ص 110 تا 111 مولتکت ن و تسرف

[2]....مدنیٰ مسکرا مارکجی مسالیسے شرعاً، 5 تا 10 شاً بانوں معتزّم 1429 ہجری و معتزلہ

جمعہ 8 تا 13 اگست 2008 ایسی

अपनी आखिरत और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल के नुक्सान का सबब न बनिये ।⁽¹⁾

सुवाल (7) : फ़िक्रे मदीना कर रहा था कि वालिदैन में से किसी एक ने आवाज़ दी तो क्या फ़िक्रे मदीना करता रहे या पहले माँ बाप की बात सुने ?

जवाब : फ़िक्रे मदीना करते हुए माँ बाप में से किसी ने आवाज़ दी तो फ़ौरन उन की पुकार पर लब्बैक कहे कि माँ बाप जब आवाज़ दें तो बिला उङ्ग जवाब में ताख़ीर करना जाइज़ नहीं । बा'ज़ लोग इस में सख्त ला परवाही से काम लेते हैं और जवाब में ताख़ीर को **مَعَاذَ اللَّهِ مَعَاذَ اللَّهِ** बुरा भी नहीं समझते हालां कि अगर नफ़्ल पढ़ रहे हैं और माँ बाप को इस का इल्म नहीं तो मा'मूली तौर पर भी अगर वोह पुकारें तो नमाज़ तोड़ कर जवाब देना होगा ।⁽²⁾ और बा'द में उस नफ़्ल नमाज़ को दोबारा पढ़ना होगा कि नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ कर के जान बूझ कर तोड़ दें तो उसे दोबारा पढ़ना वाजिब है ।⁽³⁾

सुवाल (8) : मदनी इन्डियामात का रिसाला पुर करने के लिये किसी से क़लम मांग कर इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब : हत्तल मक़दूर बचा जाए कि किसी से कुछ सुवाल करना (या'नी मांगना) अच्छा नहीं ।

तन्जीमी एुहतियातें

सुवाल (1) : बा'ज़ मदनी इन्डियामात चन्द जुज़इयात पर मुश्तमिल हैं ऐसे मदनी इन्डियामात में कितनी जुज़इयात पर अ़मल तन्जीमी तौर पर अ़मल माना जाएगा ?

[1]....अल मदीना डाइरी, अख़लाक़े मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी के 19 मदनी फूलों में से मदनी फूल नम्बर 15, स. 14

[2]....समुन्दरी गुम्बद, स. 11

[3]....बहारे शरीअ़त, सुननो नवाफ़िल का बयान, 1 / 668

जवाब : जो मदनी इन्हामात 3 या 4 जुज़इयात पर मुश्तमिल हैं उन में से अगर अक्सर पर अ़मल हुवा तो अ़मल मान लिया जाएगा, मसलन मदनी इन्हाम नम्बर 19 : क्या आज आप ने नमाजे तहज्जुद, इशराक़ व चाशत और अब्वाबीन अदा फ़रमाई ? इस मदनी इन्हाम में 4 जुज़इयात हैं, अगर इन में से 3 जुज़इयात पर भी अ़मल हो गया तो इस मदनी इन्हाम पर अ़मल मान लिया जाएगा ।

सुवाल (2) : इजारे के वक्त (*Working hours*) में (वोह मदनी इन्हामात जिन का तअल्लुक़ फ़राइज़ो वाजिबात व सुन्ते मुअक्कदा और मोहलिकात से है, के इलावा) बा'ज़ मदनी इन्हामात पर अ़मल करना मुमकिन नहीं होता, तो क्या तन्ज़ीमी तौर पर इन मदनी इन्हामात पर अ़मल मान लिया जाएगा ?

जवाब : ऐसे मदनी इन्हामात पर अ़मल करने के लिये इजारे के अवकात (*Working hours*) के इलावा अपनी अपनी सहूलत के मुताबिक़ वक्त तै कर के अ़मल किया जा सकता है कि जज्बा राहनुमाई करता है ।

सुवाल (3) : बा'ज़ मदनी इन्हामात पर शरई मजबूरी की वज्ह से अ़मल नहीं हो पाता तो क्या तन्ज़ीमी तौर पर इन पर अ़मल शुमार किया जाएगा ?

जवाब : जी हाँ ! शरई मजबूरी की बिना पर उस दिन का अ़मल शुमार कर लिया जाएगा (जब कि पहले से उस मदनी इन्हाम पर अ़मल हो) ।

सुवाल (4) : वोट्स एप (*WhatsApp*) या किसी भी *Chat messenger* के ज़रीए मुस्कुराने या रोने वाले अन्दाज़ पर मुश्तमिल तसावीर भेजने से क्या इशारे वाले मदनी इन्हाम पर अ़मल माना जाएगा ?

जवाब : जी हां ! अःमल मान लिया जाएगा ।

सुवाल (5) : अगर ऐसा इशारा किया जो गुनाह पर मन्दी हो या'नी उस में झूट या ग़ीबत, चुग़ली या दिल आज़ारी वगैरा हो तो क्या ऐसा इशारा भी मदनी इन्ड्राम पर अःमल शुमार होगा ?

जवाब : जी नहीं ! ऐसे इशारों से मदनी इन्ड्राम पर अःमल शुमार न होगा । बल्कि ऐसे इशारे करने वाला गुनाहगार है । क्यूंकि झूट और ग़ीबत जिस तरह ज़बान से बोल कर होते हैं इसी तरह इशारों से भी हो जाते हैं । लिहाज़ा ऐसे इशारे करने वाले को तौबा के साथ साथ मुआफ़ी व तलाफ़ी की भी सूरत बनाना होगी ।

सुवाल (6) : फ़ोन पर ब ज़रीअःए वोट्स एप (*WhatsApp*) या स्काइप (*Skype*) वीडियो कॉलिंग (*Video Calling*) के ज़रीए बात करते हुए या मदनी मश्वरा व बयान के वक्त मुख़ातब के चेहरे पर नज़र न गाड़ें तो क्या येह निगाहें नीची रखने वाले मदनी इन्ड्राम पर अःमल माना जाएगा ?

जवाब : जी हां ! माना जाएगा ?

सुवाल (7) : अगर किसी दिन किसी मदनी इन्ड्राम पर अःमल न हुवा तो क्या दूसरे दिन कर सकते हैं ?

जवाब : जी ! बा'ज़ मदनी इन्ड्रामात वाक़ेई ऐसे हैं कि अगर किसी एक दिन या चन्द दिन इन पर अःमल न हो सके तो जितने दिन नाग़ा हो, उन का हिसाब लगा कर अःमल कर लेने पर तन्ज़ीमी तौर पर अःमल मान लिया जाएगा । मसलन फैज़ाने सुन्नत के चार सफ़हात पढ़ने, 313 बार दुरुदे पाक पढ़ने या कम अज़् कम तीन आयात की तिलावत (मअ़ तर्जमए कन्जुल ईमान व तफ़सीर) से मह़रूमी रही तो येह अःमल अगले दिन भी कर सकते हैं ।

सुवाल (8) : दो दिन की एक साथ फ़िक्रे मदीना हो सकती है ?

जवाब : जी नहीं ! दो दिन की फ़िक्रे मदीना एक साथ नहीं हो सकती ।

सुवाल (9) : मदनी मर्कज़ की जानिब से दिये गए एक जैली हड़के पर कम अज़ कम कितने मदनी इन्ड्रामात के आमिलीन (या'नी मदनी इन्ड्रामात का रिसाला अक्सर दिन पुर कर के जम्मु करवाने वाले) का हदफ़ है ?

जवाब : जैली हड़के पर कम अज़ कम 12 मदनी इन्ड्रामात के आमिलीन का हदफ़ है ।

सुवाल (10) : क्या ब ज़रीअए मोबाइल एस एस (**SMS**) या वॉट्सएप लिख कर गुफ्तगू करने वाले का मदनी इन्ड्राम पर अ़मल शुमार हो जाएगा ?

जवाब : ज़रूरत की बात ब ज़रीअए एस एस (**SMS**) या वॉट्स एप (*WhatsApp*) लिखने की सूरत में अ़मल मान लिया जाएगा ।

सुवाल (11) : जो इस्लामी भाई खुसूसी (या'नी गूंगे, बहरे) इस्लामी भाइयों को इशारों में नेकी की दा'वत देते हैं, क्या उन का इशारे से की गई गुफ्तगू करने वाले मदनी इन्ड्राम पर अ़मल माना जाएगा ?

जवाब : ज़रूरत के इशारे वोह भी मौक़अ की मुनासबत से करें तो अ़मल मान लिया जाएगा ।

मुफ्फीद्द मा'लूमात पर मब्दी सुवालात

सुवाल (1) : मदनी इन्ड्रामात क्या हैं ?

जवाब : शैखे तरीक़त, अर्मीरे अहले सुन्नत دامت برکاتُهُمْ النَّعَالِيَةُ ने इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकों पर मुश्तमिल जो सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं वोह मदनी इन्ड्रामात हैं ।

سُوَال (2) : مدنیِ انعامات کا سلسلہ کیون شروع ہوا؟

جواب : شے خے ترکت، امریارے اہل سمعت دَامَتْ بَرَكَتُهُمْ عَلَيْهِ فرماتے ہیں؛ مدنی کام میں ترکتی، اخلاقی تربیت و تکوہ میلے، اس گرج سے میں نے مدنیِ انعامات کا سلسلہ شروع کیا۔⁽¹⁾

سُوَال (3) : مدنیِ انعامات کا سلسلہ کب شروع ہوا؟

جواب : مدنیِ انعامات کا سلسلہ تو پہلے سے ہی چلا آ رہا تھا، لیکن سوالات کی سوچت میں 1992ءِ ایسی میں شروع ہوا، اس دوران 12 مدنیِ انعامات فرم کی سوچت میں شروع ہوئے، فیر 1994ءِ ایسی میں 30 مدنیِ انعامات فرم کی سوچت میں آئے جو کہ 1996ءِ ایسی تک چلے۔ فیر 1996ءِ ایسی میں کارڈ کی سوچت میں 50 مدنیِ انعامات آئے اور 1998ءِ ایسی تک چلے، فیر 1998ءِ ایسی میں 72 مدنیِ انعامات رسالے کی سوچت میں شروع ہوئے جو تا حال اپنی بارکتے لुٹا رہے ہیں۔

سُوَال (4) : فیکر مدنی کیسے کہتے ہیں؟

جواب : اپنے گناہوں کا احتساب کرنے، کبھی حشر کے بارے میں گیروں فیکر کرنے اور اپنے اچھے بurer کاموں کا جائزہ لےتے ہوئے مدنیِ انعامات کا رسالہ پور کرنے کو دا'ватے اسلامی کے مدنی ماحول میں فیکر مدنی کرننا کہتے ہیں۔⁽²⁾

سُوَال (5) : فیکر مدنی کا ترکیب کیا ہے؟

جواب : مدنیِ انعامات کے رسالے میں ہر مدنیِ انعام کے نیچے 30 دینوں کے

[1]... جنnt کے تلبغاڑوں کے لیے مدنی گلداستا، س. 25

[2]... جنnt کے تلبغاڑوں کے لیے مدنی گلداستا، س. 11

दौरान खाने पुर करने का सिलसिला) कीजिये, जिन जिन मदनी इन्हामात पर अ़मल हुवा, मदनी इन्हाम (सुवाल) के नीचे दिये गए खाने में (◇) का निशान लगाइये जिन जिन मदनी इन्हामात पर अ़मल नहीं हुवा, उन मदनी इन्हामात (सुवालात) पर (o) का निशान लगा दीजिये, ﴿إِنَّ شَاءَ اللَّهُ بِمِنْ إِنْ شَاءَ﴾ ब तदरीज अ़मल में इज़ाफे के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत पाएंगे ।

सुवाल (6) : कुफ़्ले मदीना किसे कहते हैं ?

जवाब : ज़रूरत की बात भी कम लफ़्ज़ों और कम इशारों में की जाए, इसे कुफ़्ले मदीना कहते हैं ।

सुवाल (7) : यौमे कुफ़्ले मदीना किसे कहते हैं और इस के मनाने का तरीक़ा क्या है ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में हर मदनी माह की पहली पीर शरीफ़ को (या'नी इतवार मग़रिब ता पीर मग़रिब) यौमे कुफ़्ले मदीना मनाने की इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये तरगीब है, इस में मक्तबतुल मदीना का रिसाला ख़ामोश शहज़ादा एक बार पढ़ना या सुनना होता है ।

सुवाल (8) : अक्सर अव्याम फ़िक्रे मदीना से क्या मुराद है ?

जवाब : अक्सर अव्याम फ़िक्रे मदीना से मुराद मदनी माह के 29 या 30 दिनों में से 15 या 16 दिन मुराद हैं । क्यूंकि अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा या'नी 100 में से 51 या इस से ज़ियादा ता'दाद को कहते हैं ।

सुवाल (9) : मदनी इन्हामात का रिसाला पुर करने या'नी फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत पाने के लिये क्या किया जाए ?

जवाब : मदनी इन्हामात का रिसाला पुर करने या'नी फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत पाने के लिये इन मदनी फूलों को पेशे नज़र रखना मुफ़्रीद है :

❖ पाबन्दी से (अपनी अपनी सहूलत के मुताबिक़) फ़िक्रे मदीना का वक़्त

मरुभूस करना ☈ किस वक्त किस मदनी इन्ड्राम पर अमल हो अपनी अपनी सहूलत के मुताबिक् इस का जदवल बनाना⁽¹⁾ ☈ बुजुगने दीन के नेक आ'माल पर इस्तिकामत पाने वाले वाकिअंत का मुतालआ करना ☈ नेक आ'माल की बजा आवरी पर हासिल होने वाले फुयूज़ो बरकात और नेक आ'माल से महरूमी पर होने वाले नुक्सानात को पेशे नज़र रखना ☈ तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहना ☈ दुआ करना और करवाना ।

सुवाल (10) : कितने मदनी इन्ड्रामात का आमिल अन्तार का दोस्त कहलाता है ?

जवाब : इस्लामी भाइयों के लिये मुरत्तब शुदा 72 मदनी इन्ड्रामात में से रिज़ाए रब्बुल अनाम के 12 मदनी काम करने वाला इस्लामी भाई अन्तार का दोस्त कहलाता है ।

सुवाल (11) : कितने मदनी इन्ड्रामात का आमिल अन्तार का प्यारा कहलाता है ?

जवाब : इस्लामी भाइयों के लिये मुरत्तब शुदा 72 मदनी इन्ड्रामात में से कम अज़ कम 63, जामिअतुल मदीना का तालिबे इल्म 92 में से कम अज़ कम 82 का आमिल हो तो अन्तार का प्यारा कहलाता है ।

सुवाल (12) : कितने मदनी इन्ड्रामात का आमिल अन्तार का मन्ज़ूरे नज़र कहलाता है ?

जवाब : इस्लामी भाइयों के लिये मुरत्तब शुदा 72 मदनी इन्ड्रामात में से अन्तार का दोस्त और प्यारा बनने के साथ साथ येह पांच मदनी काम करे तो वोह अन्तार का मन्ज़ूरे नज़र कहलाता है : रोज़ाना कम अज़ कम 12 बार लिख कर और 12 बार इशारे से गुफ्तगू करे । 12 मिनट कुफ़्ले मदीना का ऐनक

[1]....इस का फ़र्ज़ी खाका देखने के लिये सफ़हा नम्बर 36 मुलाहज़ा फ़रमाएं ।

इस्ति'माल करे। कम अज़्ज कम 12 बार सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाढ़े बिंगैर गुफ्तगू करे। नीज़ हफ्ते में कम अज़्ज कम एक रिसाला पढ़े।

सुवाल (13) : कितने मदनी इन्डिया मात का आमिल महबूबे अंत्तर कहलाता है?

जवाब : जो मज़कूरा बाला तमाम मा'मूलात के साथ साथ इस्लामी भाइयों के लिये मुरत्तब शुदा 72 मदनी इन्डिया में से मुकम्मल 72 और जामिअतुल मदीना के तलबए किराम के लिये मुरत्तब शुदा 92 मदनी इन्डिया में से मुकम्मल 92 मदनी इन्डिया का आमिल हो वोह अंत्तर का महबूब है।

सुवाल (14) : फ़िक्रे मदीना न करने में सुस्ती की वुजूहात क्या क्या हो सकती हैं?

जवाब : रोज़ मर्या ज़िन्दगी के मा'मूलात में अपने आ'माल के मुहासबे (या'नी फ़िक्रे मदीना) का वक़्त न रखना ☺ बे सोचे समझे फ़िक्रे मदीना का वक़्त मुकर्रर करना ☺ तै शुदा वक़्त पर मदनी इन्डिया के रिसाले का होना मगर क़लम (Pen) का न होना या क़लम (Pen) होना मगर रिसाले का न होना या दोनों का न होना ☺ नफ़सो शैतान की रुकावटें, बेजा सुस्ती व दीगर मसरूफ़िय्यात की बिना पर तै शुदा वक़्त पर फ़िक्रे मदीना न करना।

सुवाल (15) : मदनी इन्डिया की मजलिस बनाने का मक्सद क्या है?

जवाब : ज़िम्मेदारान को तसव्वुफ़ और तक़्वा का ज़ेहन देना, नेक व बा अमल बनाना और अमल का जज्बा पैदा करना वगैरा गोया मदनी इन्डिया की मजलिस बनाने का बुन्यादी मक्सद है।⁽¹⁾

सुवाल (16) : मदनी इन्डिया की बुन्याद किस चीज़ पर है?

जवाब : मदनी इन्डिया की बुन्याद इल्मो अमल पर है।⁽²⁾

[1]....मदनी मशवरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 23 ता 27 मुहर्रमुल हराम 1429 हिजरी ब मुताबिक जुमआ 1 ता 5 फ़रवरी 2008 ईसवी

[2]....मदनी मशवरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 12 ता 14 शब्वालुल मुकर्रम 1433 हिजरी ब मुताबिक 31 अगस्त ता 2 सितम्बर 2012 ईसवी मफ्हूमन

سُوْفَال (17) : کین کین جگاہوں پر اشارة سے گوپتھگو کی جا سکتی ہے ؟

جواب : گوپتھگو کے اشارة سیخ لیجیے اور جڑھر تھن اس تھرھ کی تکھسیم کر لیجیے ماسلناں والیدن سے نیج فون پر جبناں سے بات کھرھنگا، جو چوتا بھائی مادنی ماھول میں ہے اس سے اور فولان فولان اسلامی بھائی سے ہٹھل ایمکان اشارة سے اور لیخ کر کام چلاؤ گا ।⁽¹⁾

سُوْفَال (18) : مادنی ہدیۃ امامت کی بھومیت کیسے ہے ؟

جواب : فرمانے امریروں اہلے سعنات ڈامؑ بِكَلَمٍ أَعْلَم : جب بڈے جیمیداران سراپا مادنی ہدیۃ امامت بن جائے گے، روزانہ فیکر مداری کر کے ہر مادنی ماہ کی پہلی تاریخ کو موت اعلیٰ لکھا جیمیدار کو مادنی ہدیۃ امامت کا رسالہ جامع کر واہے گے، بات بات پر مادنی ہدیۃ امامت کا جیکر کرے گے کہ فولان مادنی ہدیۃ امامت میں یوں ہے، فولان میں یوں ہے تو ہر تر ف مادنی ہدیۃ امامت کی بھومیت ہو جائے گی ।⁽²⁾

سُوْفَال (19) : مادنی ہدیۃ امامت کی تاریخ دیلانا کا کوئی مुखھس سر تھریک ایرشاد فرمادیجیے ؟

جواب : پندراہوں سدی کی انجیم اسلامی و رہانی شاخیمیت، شاخے تھریکت، امریروں اہلے سعنات، بانیوے دا'وتوے اسلامی ہجھر تھلے اعلیٰ مولانا عبد بھلیال معمد ایلیاس اعضاً کا دیری رجھیو جیسا ہے ڈامؑ بِكَلَمٍ أَعْلَم نے اسلامی جنگی گوجانے کے لیے اس پور فیکر دا'وتوے میں نہ کیا کرنے اور گوناہوں سے

[1]....آل مداری داواری، اخلاک میں موالیلے دا'وتوے اسلامی کے 19 مادنی فولوں میں سے مادنی فول نمبر 13، ص. 14

[2]....مادنی مسکرا مارکجی مراجیل سے شورا، 14 تا 19 شاہزادی مکررم 1438 ہیجری ب معتابیک 8 تا 13 جولائی 2017 ایسکو

बचने के तरीकों पर मुश्तमिल शरीअत व तरीक़त का जामेअ मजमूआ 72 मदनी इन्ड्रामात ब सूरते सुवालात अतः फ़रमाए हैं, जिन पर अमल करने से खौफ़े खुदा और इश्क़े मुस्तफ़ा हासिल होता है, आइये ! हम भी मदनी इन्ड्रामात पर अमल करते हुए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी रिसाला पुर) करने की नियत करते हैं।

सुवाल (20) : ता दमे तहरीर कितनी ज़बानों में 72 मदनी इन्ड्रामात के रिसाले का तर्जमा हो चुका है ?

जवाब : ता दमे तहरीर 72 मदनी इन्ड्रामात का रिसाला 22 ज़बानों में आ चुका है जिन में से चन्द येह हैं : अंग्रेज़ी, हिन्दी, बंगला, पश्तो, सिन्धी, अरबी वगैरा ।

सुवाल (21) : अपने घर के मदनी मुन्नों को फ़िक्रे मदीना कैसे करवाई जाए ?

जवाब : मदनी मुन्नों को घर दर्स के बा'द या सोने से क़ब्ल या जैसे सहूलत हो, उस के मुताबिक़ फ़िक्रे मदीना कराई जा सकती है ।

मोबाइल पुण्लीकेशन के मुताबिलक़ मुफ़्त मा'लूमात

सुवाल (1) : क्या मदनी इन्ड्रामात की एप्लीकेशन (Application) के ज़रीए “फ़िक्रे मदीना” मानी जाएगी ?

जवाब : जी हाँ ! मानी जाएगी ।

सुवाल (2) : मदनी इन्ड्रामात की मोबाइल एप्लीकेशन (Application) को डाऊन लोड करने का तरीक़ा क्या है ?

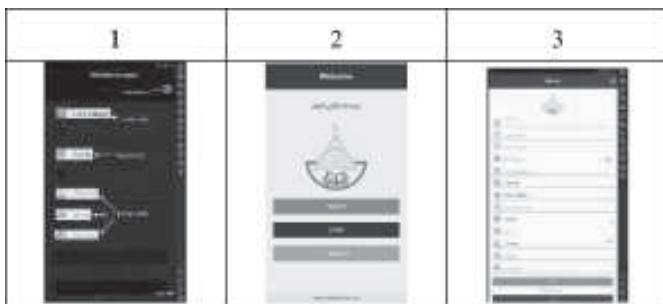
जवाब : मदनी इन्ड्रामात की एप्लीकेशन डाऊन लोड (Download) करने के लिये सब से पहले अपने मोबाइल (Mobile) के प्ले स्टोर (Play Store) /

एप स्टोर (App Store) में जाइये, वहां सर्च बार (Search Bar) में ये ह अल्फाज़ (Madani inamat) लिख कर सर्च ऑप्शन (Search Option) पर क्लिक कीजिये, जिस एप्लीकेशन पर IT department of Dawateislami लिखा हो, उस पर क्लिक (Click) करने से एक नया पेज (New Page) ओपन (Open) होगा, वहां उस एप्लीकेशन की मज़ीद वज़ाहत होगी और एक तरफ लिखा होगा INSTALL। उस पर क्लिक कीजिये, अब दोबारा एक नया पेज खुलेगा जहां ACCEPT लिखा होगा, उसे क्लिक करने से ये ह एप्लीकेशन डाऊन लोड होने के बाद खुद ही इन्स्टॉल (Install) होना शुरूअ़ हो जाएगी।

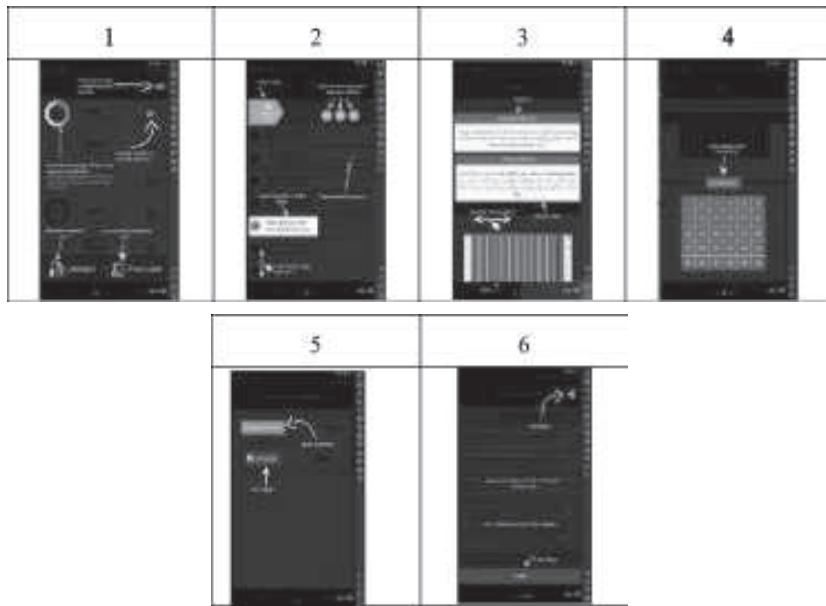
सुवाल (3) : मदनी इन्ड्रामात की एप्लीकेशन में रजिस्टर (SIGN UP) होने का तरीक़ा क्या है?

जवाब : मदनी इन्ड्रामात की एप्लीकेशन में रजिस्टर (SIGN UP) के लिये सब से पहले उसे ओपन कीजिये। जो पेज खुलेगा उस पर सब से नीचे दाईं जानिब Skip लिखा होगा उस पर क्लिक कर दीजिये। नए खुलने वाले पेज पर बित्तरतीब तीन ऑप्शन होंगे SIGN UP, LOGIN, ENGLISH पहली बार उसे इस्त'माल करने वाले के लिये SIGN UP के ऑप्शन (Option) पर क्लिक करना होता है, उसे क्लिक करने के बाद नया पेज खुलेगा इस पर एक फ़ॉर्म (Form) होगा जिस में नाम, एप (App) के लिये पासवर्ड (Password), मेल आई डी (Mail ID), ज़बान का इन्तिख़ाब, मदनी इन्ड्रामात की केटेगरी

(Category) मसलन इस्लामी भाइयों के लिये, इस्लामी बहनों के लिये और तालिबे इल्मों के लिये मदनी इन्ड्राम, फ़ोन नम्बर, मुल्क और शहर का नाम लिखने को कहा जाएगा, उस फॉर्म को आप अपने मुताबिक़ पुर करने के बाद आखिर में मौजूद SIGN UP के ओप्शन पर क्लिक कर दीजिये, अगर आप दा'वते इस्लामी के किसी शो'बे के तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार हैं तो फॉर्म (Form) के बक़िया हिस्से पर शो'बे का नाम और उस में जो आप की तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी है उसे लिखने के बाद SIGN UP के ओप्शन (Option) पर क्लिक कीजिये। इस के बाद रोज़ाना की फ़िक्रे मदीना के लिये मदनी इन्ड्रामात की एप (App) खुल जाएगी।

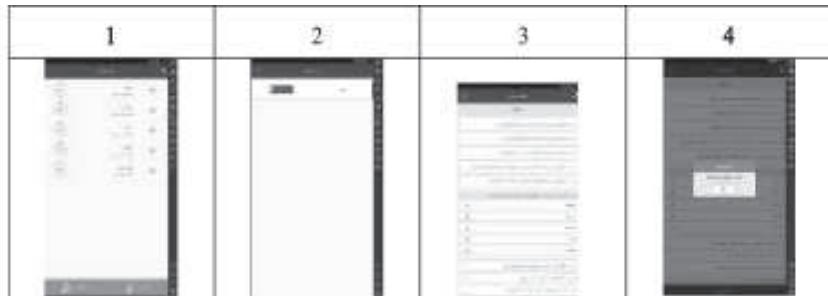


तवज्जोह : अगर आप ने मज़कूरा बाला तरीके कार में Skip पर क्लिक न किया तो आप को दर्जे जैल सफ़हात को बित्तरतीब फ़ोरवर्ड (Forward) करना होगा और फिर भी आखिर में आप को मज़कूरा बाला तरीके के मुताबिक़ Skip कर के इसी दूसरी तस्वीर पर जाना होगा, फिर मज़कूरा तरीके के मुताबिक़ ही फॉर्म (Form) पुर (Fill) करना होगा। चुनान्वे, वोह तमाम सफ़हात (Pages) जो आप को फ़ोरवर्ड (Forward) करना होंगे, वोह कुछ इस तरह हो सकते हैं :



सुवाल (4) : मदनी इन्ड्रामात की एप्लीकेशन में कारकर्दगी जम्म़ (Submit) करवाने का तरीका क्या है ?

जवाब : मदनी इन्ड्रामात की एप (App) में कारकर्दगी जम्म़ (Submit) करवाने के लिये एप (App) के पहले सफ़हे (Page) के बिल्कुल आखिर में बाईं जानिब लिखा होगा : रिपोर्ट दर्ज करें । उस पर क्लिक (Click) कर दीजिये, अगले सफ़हे पर मौजूदा इस्लामी महीने का नाम और रिपोर्ट देखिये, लिखा होगा, उस पर क्लिक करने से एक फ़ॉर्म (Form) खुलेगा, उसे मुकम्मल कर के आखिर में लिखे सबमिट (Submit) के ओप्शन (Option) पर क्लिक (Click) कर दीजिये । आप की कारकर्दगी का डेटा जम्म़ होना शुरूअ़ हो जाएगा, जब येह मुकम्मल हो जाएगा तो एक छोटा सा पेज ओपन (Open) होगा, उस पर लिखे ok पर क्लिक कर दीजिये, कारकर्दगी जम्म़ (Submit) हो जाएगी ।



نوت : ہر دوسرے میں اپشن (Option) اس سوتھ میں جاہیر ہونگے، جب آپ نے اپلیکیشن (Application) کی لینگوچ (Language) ہر دو رکھی ہوگی ।

سُووال (5) : مادنیٰ ڈنڈاً مات کی اپلیکیشن (Android and iOS) کیں کیں شو' باجات میں تا دمے تھریر آ چکی ہے ؟

جواب : اسلامی بائیوں، اسلامی بہنوں اور جامیعۃ النبی مدنیا کے تعلیمات کی راستے مادنیٰ ڈنڈاً مات کی اپلیکیشن (Android and iOS) آ چکی ہے ।

سامانے مادنیٰ ڈنڈاً مات کی فہرست

- ﴿1﴾ کنجوں ایمان شریف ﴿2﴾ شجراءِ عزّتیں ﴿3﴾ تمہیدوں ایمان، ہوسا مولہ حرمائیں ﴿4﴾ جننات کے تعلیماتگاروں کے لیے مادنیٰ گلداشت (مینہاجوں ابتدیان اور بہارے شریعت کے مੁنਤखب ابتواب و مجاہدین اور مادنیٰ ڈنڈاً مات کے مुتابیک سوتھوں، چ کالیمے، اور آدھے وجاہ ایف اور دو آؤاؤں کا بہترین ماجموں)
- ﴿5﴾ مادنیٰ رسائل (رسائل سے موراد مکتبتوں مدنیا سے شاءع ہونے والے امیرے اہلے سونت دامت برکاتہم العالیہ کے رسائل ہیں) ﴿6﴾ فیجاںے سونت
- ﴿7﴾ مادنیٰ پوٹوں کے پیمپلےٹ (Pamphlet) ﴿8﴾ مادنیٰ ڈنڈاً مات کا رسالہ (فیکر مدنیا کے دائران روچانا خانے پور کرنے کے لیے) ﴿9﴾ کوپلے مدنیا کا

મદની પેડ મઅ કલમ (લિખ કર ગુપ્તગૂ કી આદત બનાને કે લિયે)
 ॥10॥ કુફ્લે મદીના કા કાર્ડ (બરાએ નેકી કી દા'વત સીને પર સજાને કે લિયે)
 ॥11॥ ઇમામા શરીફ મઅ સરબન્દ શરીફ ॥12॥ મદની ચાદરેં (ઓઢને કે લિયે
 સફેદ ઔર પર્દે મેં પર્દા કે લિયે કથ્થર્ડી) ॥13॥ કુફ્લે મદીના કા એનક (નિગાહોં
 કી હિફાજત કે લિયે ॥14॥ કુફ્લે મદીના કા પથ્થર (ખામોશી કી આદત
 ડાલને ઔર સુન્તે સિદ્ધીકી અદા કરને કે લિયે) ॥15॥ સુન્ત બોક્સ (બત્તારે
 સુન્ત સોતે વક્ત સિરહાને ઔર સફ્ર મેં સાથ રખને કે લિયે આઈના, કંધી, સૂર્ય
 ધાગા, મિસ્વાક, તેલ કી શીશી ઔર કેંચી) ॥16॥ ચટાઈ ॥17॥ મિટ્રી કે બરતન ।

દુઅએ અભ્રાણ : યા **અલ્લાહ** ! જો કોઈ યેહ સામાને મદની ઇન્થામાત
 અપને યહાં બસાએ ઔર ઇન કો ઇસ્તિ'માલ ભી કરતા રહે, મુઝે ઔર ઉસ કો
 ઇખ્લાસ કી લા જવાલ દૌલત, જલ્વએ મહબૂબ મેં શહાદત, જન્તુલ બકીઅ મેં
 મદફન, જન્તુલ ફિરદૌસ મેં બે હિસાબ દાખિલા ઔર પ્યારે મહબૂબ
أَمِينٌ بِجَاهِ الْبَيْنِ الْأَمْيَنِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
 કા પડોસ નસીબ ફરમા ।

“મદની ઇન્થામાત” કી હો રેલ પેલ

નેક હો ઉમ્મત એ નાનાએ હુસૈન ⁽¹⁾

મેં બન જાऊં સરાપા “મદની ઇન્થામાત” કી તસ્વીર

બનૂંગા નેક યા **અલ્લાહ** અગાર રહુમત તેરી હોગી ⁽²⁾

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1....વસાઇલે બખ્ખિશાશ (મુરમ્મમ), સ. 258

2....વસાઇલે બખ્ખિશાશ (મુરમ્મમ), સ. 393

مذاہیک جو مراجع

كتاب	مطبوعہ	كتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	*****	درة الناصحين	دار احیاء الكتب العربية
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ	فی الوضع و الاشارة	۱۴۳۲ھ
تفسیر قرطی	دار الفکر بیروت ۱۴۲۹ھ	عيون الحکایات	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۲۲ھ
بیوح البیان فی تفسیر القرآن	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۳۳ھ	فیہان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۸ھ
نور العرقان	تعییی کتب خانہ گجرات	۱۶۳ مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
صراط ایمان فی تفسیر القرآن	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	گرمی سے حفاظت کے	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۷ھ
سنن الترمذی	دار الكتب العلمية بیروت ۲۰۰۸ء	مدنی پھول	مساوک شریف کے فضائل
کشف الخالق عن مردیل الالیاس	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۲۲ھ	۱۶۳ مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نوادر الاصول	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۳۱ھ	گھر یو معلمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۹ھ
الله، المختار	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۲۳ھ	۱۶۳ مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
شرح توبہ الانصار	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۲۳ھ	سمندری گلد	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
برد الحقائق علی الدلیل، المختار	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۸ھ	جنت کے طلاقگاروں کے لئے	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
حاشیۃ الطحاوی علی مرائق الفلاح شرح نذر الایضاح	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۳۸ھ	مدنی گلہستہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ	عربی کے سوالات اور عربی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
جتنی زیور	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ	آقا کے جوابات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ	ٹکر مدینہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ
قوت القلوب	دار الكتب العلمية بیروت ۱۴۲۶ھ	صدائے مدینہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
احیاء علوم الدین	دار الكتب العلمية بیروت ۲۰۰۸ء	حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
مختصر منهاج القاصدین	مکتبۃ دار الایمان ۱۴۳۹ھ	ذوقِ نعمت	شیبزادہ لاہور ۱۴۳۸ھ
کیمیائے سعادت	النوریہ الرضویہ پیلسنگ مہنگ لاہور	سامان بخشش	شیبزادہ لاہور ۱۴۳۸ھ
تذکرۃ الاولیاء	انشارات گجینہ ۱۴۳۷ھ	وساکل بخشش (فرم)	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ

फ़ेहरिस्त

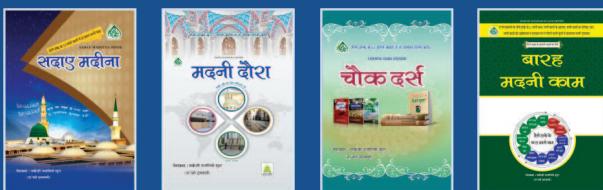
उनवान नम्बर	सफ़हा नम्बर	उनवान नम्बर	सफ़हा नम्बर
दुरुद शरीफ़ की फ़जीलत	1	माहाना मदनी इन्डिया	39
बुजुर्गों की मदनी सोच	1	सालाना मदनी इन्डिया	39
उख़रवी कामयाबी की फ़िक्र	3	इजातिमाई फ़िक्र मदीना का तरीका	40
अनमोल बातें	4	कुफ़्ले मदीना कारकर्दगी	42
ज़िन्दगी अमानत है	8	दुआए अमीरे अहले सुन्नत	42
बरोजे कियामत हसरत	8	मदनी इन्डिया के मुतअल्लिक फ़रामीने	43
अभी भी वक्त है	10	अमीरे अहले सुन्नत	
हिसाब से पहले हिसाब की तयारी	12	आमिलीने मदनी इन्डिया को अमीरे	46
आमल का हिसाब करने से मुगद	13	अहले सुन्नत की दुआएं	
आज “क्या क्या” किया ?	14	मदनी इन्डिया के बारे में मर्कज़ी मजलिसे	47
फ़िक्र मदीना कैसे की जाए ?	15	शूरा के मदनी फूल	
मदनी इन्डिया क्या है ?	17	मदनी इन्डिया की मदनी बहारें	49
मदनी इन्डिया की दरजाबन्दी	18	मदनी इन्डिया की बरकतें	50
मदनी इन्डिया के मकासिद	19	मदनी इन्डिया से मुतअल्लिक शरई व	53
क्या मदनी इन्डिया पर अमल ज़रूरी है ?	20	तन्ज़ीमी एहतियातें पर मुश्तमिल	
72 मदनी इन्डिया एक नज़र में	23	सुवालात	
चन्द मदनी इन्डिया के तिब्बी व साइन्सी फ़वाइद	26	शरई एहतियातें	53
क्या मदनी इन्डिया पर अमल मुश्किल है ?	34	तन्ज़ीमी एहतियातें	56
मुश्किलात से घबराना नहीं चाहिये	35	मुफ़्रद मा’लूमात पर मन्त्री सुवालात	59
मदनी इन्डिया पर अमल करने का फ़र्ज़ी जदवल	36	मोबाइल एप्लीकेशन के मुतअल्लिक	65
सुब्ह दो घन्टे का जदवल	36	मुफ़्रद मा’लूमात	
मगरिब की नमाज़ के बाँद का जदवल	37	सामाने मदनी इन्डिया की फ़ेहरिस्त	69
इशा की नमाज़ से 2 घन्टे का जदवल	37	मआखि़जो मराजेअ	71
आदात में शामिल मदनी इन्डिया	38	फ़ेहरिस्त	72
हफ़्तावार मदनी इन्डिया	38	❖❖❖❖	

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النُّبُوْلِيهِنَّ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّئِنَ الرَّجِيمِ طَبِيعَةُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

नैक नमाजी बनने के लिये

हर जुमे 'रात बा'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा 'बते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअः में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात शिर्कत फरमाइये ۴ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी काफिले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफर और ۴ रोजाना “फिक्र मदीना” के ज़रीए मदनी इन्अमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख अपने यहां के जिम्मेदार को जम्म करवाने का मा'मूल बना लीजिये ।

मेरा मदनी मक्सद : “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ।” ۴ अपनी इस्लाह के लिये “मदनी इन्अमात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी काफिलों” में सफर करना है ।



0133165

❖ देहली :- मकतबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❖ अहमदाबाद :- फैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरजापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❖ मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❖ हैदराबाद :- मकतबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E-mail : mакtabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net